कृष्णा सोबती की कहानियों का तात्त्विक अध्ययन

('बादलों के घेरे' कहानी संग्रह के संदर्भ में)

HIN-675 शोध प्रबंध

श्रेयांक: 16

स्नातकोत्तर कला (हिंदी)

की उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध

शोधार्थी

सुष्मिता वेळीप

अनुक्रमांक: 22P0140033

PR Number: 201904150

मार्गदर्शक

आदित्य दयानंद सिनाय भांगी

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय

हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रैल 2024

परीक्षक: Aditya Bhangi

Seal of the School

DECLARATION BY STUDENT

I hereby declare that the data presented in this Dissertation report entitled, "krushna Sobti Ki Kahaniyon Ka Tattvik Adhyayan" ('Badlon Ke Ghere' Kahani Sangrah Ke Sandarbh Mein) is based on the results of investigations carried out by me in the Discipline of Hindi at Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University under the Supervision of Mr. Aditya Dayanand Sinai Bhangui and the same has not been submitted elsewhere for the award of a degree or diploma by me. Further, I understand that Goa University or its authorities will be not be responsible for the correctness of observations/experimental or other findings given the dissertation. I hereby authorize the University authorities to upload this dissertation on the dissertation repository or anywhere else as the UGC regulations demand and make it available to any one as needed.

Sushmita Velip

22P0140033

Date: 18th April 2024

Place: Goa University

COMPLETION CERTIFICATE

This is to certify that the dissertation report "krushna Sobti Ki Kahaniyon Ka Tatvik Adhyayan" ('Badlon Ke Ghere' Kahani Sangrah Ke Sandarbh Mein) is a bonafide work carried out by "Ms. Sushmita Velip" under my supervision in partial fulfilment of the requirements for the award of the degree of Master of Arts in the Discipline of Hindi at the Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University.

ABhangui

Aditya Dayanand Sinai Bhangui

Date: 8th April 2024

Signature of Dean of the School

GOA UNIVERSITY ★ SHENOI GOEMBAB SCHOOL OF LANGUAGES & LITERATURE ★ TALEIGAON PLATEAU

School Stamp

Date: 18th April 2024

Place: Goa University

ATMANIRBHAR BHARAT
SWAYAMPURNA GOA

गोंय विद्यापीठ
ताळगांव पठार,
गोंय – ४०३ २०६
फोन : +९१-८६६९६०९०४८

(Accredited by NAAC)

Goa University
Taleigao Plateau, Goa-403 206
Tel : +91-8669609048
Email : registrar@unigoa.ac.in
Website : www.unigoa.ac.in

Ref. No.: GU/LIB/ATTENDANCE CERT./2024/224

Date: 2/05/2024

TO WHOM SO EVER IT MAY CONCERN

This is to certify that Miss Miss Sushmita Suresh Velip, a student of Goa University, M.A. (Hindi), visited the Goa University Library for her reference work on the following dates and completed 10 hours & 43 minutes of research internship as a part of her M.A. dissertation.

The detailed dates and times she visited are attached herewith.

This certificate has been issued at the written request of Assistant Professor Mr. Aditya Dayanand Sinai Bhangui.

2/5/24

University Librarian
(Dr. Sandesh B. Dessai)

Dr. Sandesh B. Dessai
UNIVERSITY LIBRARIAN
Goa University
Taleigao - Goa.

GOA UNIVERSITY
LIBRARY
GOA

VISITS TO THE GOA UNIVERSITY LIBRARY

SR. NO	DATE	TIME	HOURS
1.	04/09/2023	1:55 - 2: 04	09 mints
2.	04/09/2023	3:56 - 4:00	4 mints
3.	29/09/2023	3:27 - 4:10	43 mints
4.	20/06/2023	1:28 - 1:55	27 mints
5.	22/06/2023	12:05 - 12:51	46 mints
6.	27/06/2023	1:12 -1:33	21 mints
7.	19/07/2023	3:15 - 3:45	30 mints
8.	21/07/2023	2:18 - 2:35	17 mints
9.	24/07/2023	2:38 - 3:11	33 mints
10.	16/08/2023	12:05 - 12:50	45 mints
11.	21/08/2023	1:41 - 1:46	5 mints
12.	25/08/2023	3:15 - 3:45	30 mints
13.	19/01/2024	12:00- 12:05	5 mints
14.	15/02/2024	11:48 - 12:03	15 mints
15.	12/03/2024	12:24 - 12:27	3 mints
16.	13/03/2024	11:47 - 12:45	1 hrs
17.	20/03/2024	11:35 - 12 : 15	40 mints
18.	26/04/2024	10:00 - 1:30	3 hrs, 30 mints
TOTAL HOURS			**10 Hours 43 Minutes**

A Bhangui
Signature of the Guide
Asst. Prof. Aditya Dayanand Sinai Bhangui

Signature of the University Librarian
Dr. Sandesh B. Dessai

Velip 02/05/2024
Signature of the Student
Miss Sushmita Suresh Velip

अनुक्रम

अध्याय	विवरण	पृष्ठ संख्या
	Acknowledgements	II & III
	अनुक्रम	IV - VII
	कृतज्ञता एवं भूमिका	VIII - IX
1	प्रथम अध्याय :- कृष्णा सोबती : व्यक्तित्व एवं कृतित्व 1.1 : व्यक्तित्व 1.2 : लेखन के प्रेरणास्रोत 1.3 : साहित्य संसार	1 - 11
2	द्वितीय अध्याय :- 'बादलों के घेरे' कहानी संग्रह में चित्रित समस्याएँ 2.1 : प्रस्तुत कहानी संग्रह के कहानियों में चित्रित समस्याएँ 2.1.1 सामाजिक समस्या 2.1.2 पारिवारिक संघर्ष 2.1.3 द्वि-पत्नीत्व 2.1.4 स्त्री-पुरुष संबंध में द्वंद्व 2.1.5 दो पीढ़ियों का संघर्ष 2.1.6 मनोवैज्ञानिक	12 - 32

	2.1.7 बीमारी की समस्या 2.1.8 असफल प्रेम 2.1.9 रिश्ते-नातों में आए बदलाव 2.1.10 विधवा की समस्या 2.1.11 नि: संतान की समस्या 2.1.12 युवती की समस्या 2.1.13 भूख की समस्या 2.1.14 बुढ़ापे की समस्या 2.1.15 नारी संबंधी समस्याओं का चित्रण 2.1.16 अकेलापन 2.1.17 राजनीतिक समस्या 2.1.18 देश विभाजन की समस्या 2.1.19 आम लोगों की समस्या 2.1.20 धार्मिक समस्या 2.1.21 आर्थिक समस्या	
3	तृतीय अध्याय :- 'बादलों के घेरे' कहानी संग्रह की कहानियों का तत्त्वों के आधार पर समीक्षा 3.1: - कहानियाँ 3.1.1 बादलों के घेरे	33 - 75

	3.1.2 दादी अम्मा 3.1.3 भोले बदशाह 3.1.4 बहनें 3.1.5 बदली बरस गई 3.1.6 गुलाबजल गंडेरियाँ 3.1.7 कुछ नहीं - कोई नहीं 3.1.8 टीलो ही टीलो 3.1.9 अभी उसी दिन ही तो 3.1.10 दोहरी साँझ 3.1.11 डरो मत, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा 3.1.12 जिगरा की बात 3.1.13 खम्मघणी, अन्नदाता! 3.1.14 सिक्का बदल गया 3.1.15 आज़ादी शम्मोजान की 3.1.16 कामदार भीखमलाल 3.1.17 पहाड़ो के साये तले 3.1.18 न गुल था, न चमन था 3.1.19 एक दिन 3.1.20 कलगी 3.1.21 नफ़ीसा	

	3.1.22 मेरी माँ कहाँ हैं 3.1.23 लामा 3.1.24 दो राहें: दो बाँहें	
4	चतुर्थ अध्याय :- भाषा शैली 4.1. भाषा की अवधारणा - स्वरुप एवं प्रकार 4.1.1 भाषा की अवधारणा 4.2. कृष्णा सोबती की कहानियों की कथा भाषा 4.2.1 कृष्णा सोबती की कहानियों में शब्द चयन 4.2.2 कृष्णा सोबती की कहानियों में वाक्य रचना 4.2.3 अंग्रेज़ी और हिंदी मिश्रित वाक्य 4.2.4 कृष्णा सोबती की कहानियों में प्रोक्तियोजना 4.2.5 कृष्णा सोबती की कहानियों में मुहावरें और लोकोक्तियाँ 4.2.6 कृष्णा सोबती की कहानियों में लाक्षणिक भाषा का प्रयोग 4.2.7 कृष्णा सोबती की कहानियों में प्रतीकों और बिंबों से युक्त भाषा उपसंहार	76 – 102
	संदर्भ	103 – 104

कृतज्ञता

कृष्णा सोबती की कहानियों का तात्त्विक अध्ययन ('बादलों के घेरे' कहानी संग्रह के संदर्भ में') विषय पर संपन्न यह लघु शोध प्रबंध पूरा करना संभव नहीं था यदि मुझे किसी का उत्तम मार्गदर्शन नहीं मिला होता। यह लघु शोध पूरा करने में शोध निर्देशक सहायक प्राध्यापक आदित्य दयानंद सिनाय भांगी जी के सहयोग के लिए मैं उनकी आभारी हूँ। मुझे जिन किताबों की आवश्यकता थी वह किताबें उपलब्ध करवा दी और समय-समय पर मार्गदर्शन किया।

शणै गोंयबाब भाषा एवं साहित्य संकाय की उपअधिष्ठाता प्रो. वृषाली मांद्रेकर जी ने मुझे नाटकों के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण जानकारी दी। हिंदी अध्ययन शाखा के निर्देशक डॉ. बिपिन तिवारी ने भी मेरा मार्गदर्शन किया। हिंदी विभाग के अन्य प्राध्यापक दीपक वरक, ममता वेर्लेकर, मनीषा गावडे तथा श्वेता गोवेकर जी ने भी मेरा पूरा सहयोग किया। उन सभी के प्रति मैं मेरी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। मेरे परिवार वालों ने भी क़दम-क़दम पर मेरा पथ-प्रदर्शन किया, उनको सिर्फ़ धन्यवाद कहना काफ़ी नहीं होगा। मेरे शोध समूह सदस्य देविका सांबारी, रचिता कांबळी, रेशमा सावंत, रेशमा नदाफ़ और मेरी सहेली सुवर्णा गांवकार ने भी मेरी बहुत मदद की।

इसके अतिरिक्त गोवा विश्वविद्यालय ग्रंथालय, कृष्णदास शामा ग्रंथालय, पणजी, डॉ. फ्रांसिस्को लुईस गोम्स ग्रंथालय, नावेली से मुझे पूरा सहयोग मिला, वहाँ के कर्मचारियों ने मेरे विषय से संबंधित किताबें ढूँढने में मेरी मदद की और मेरा काम आसान किया। मैं सदैव उनकी ऋणी रहूँगी। अपने प्रति की हुई श्रेष्ठ और उत्कृष्ट सहायता के लिए श्रद्धावान होकर मैं सभी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

भूमिका

स्वातंत्र्योत्तर महिला कहानीकारों में कृष्णा सोबती अपने कहानी तथा उपन्यास लेखन में अपनी एक अलग पहचान बनाती है। कृष्णा सोबती ने कहानियों तथा उपन्यासों में नारी, वृद्ध, पति-पत्नी के बिच का संबंध, वेश्या बनने का कारण, तथा देश विभाजन के समय की त्रासदी को उजागर किया है। कृष्णा सोबती ने अपने साहित्य के माध्यम से देश की तत्कालीन स्थिति को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया

यह लघु शोध चार अध्ययों में विभक्त है। प्रथम अध्याय में कृष्णा सोबती का व्यक्तित्व एवं कृतित्व का उल्लेख किया गया है। जिसमें कृष्णा सोबती के जन्म से लेकर, उनके परिवार में कौन है, कृष्णा सोबती को किससे प्रेरणा मिली, किन लोगों से वह प्रभावित हुई थी इन सभी पर प्रकाश डाला गया है। द्वीतीय अध्याय में 'बादलों के घेरे' कहानी संग्रह में चित्रित समस्याओं का चित्रण किया गया है। तृतीय अध्याय में 'बादलों के घेरे' कहानी संग्रह की कहानियों का तत्वो के आधार पर समीक्षा की गई है। बादलों के घेरे कहानी संग्रह में जितनी भी कहानियाँ है उन सभी कहानियों का तत्वो के आधार पर उनका विश्लेषण किया गया है, जैसे कथानक, चरित्र चित्रण, संवाद, देशकाल-वातावरण, भाषा, शैली और उद्देश। चतुर्थ अध्याय में उपर्युक्त सभी कहानियों तथा संपूर्ण कहानी संग्रह के भाषा-शैली, शब्द चयन, वाक्य रचना, प्रोक्तियोजना एवं संवादों का उल्लेख किया है। अंत में उपसंहार और संदर्भ सूची प्रस्तुत की गई है।

इस शोध का उद्देश्य मध्ययवर्गीय परिवार की सभी सामस्याओं को लोगों के सामने लाकर, इसकी जानकारी देना भी इस शोध का उद्देश्य है।

प्रथम अध्याय

कृष्णा सोबती : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

कृष्णा सोबती : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

१.१. प्रस्तावना

जब कभी हमें किसी कलाकार की कृतियाँ सबसे ज्यादा प्रभावित करती हैं तब हमारा मन उस कलाकार के बारे में सोचने को मजबूर करता है और उसे अच्छी तरह और गंभीरता से जानने की जिज्ञासा हमारे मन में पैदा होती है। इससे हम रचनाकार के जन्म, शिक्षा एवं पारिवारिक वातावरण को जानने की कोशिश करते हैं। रचनाकार जो भी अपने जीवन में अनुभव करता है, उसे वह रचता है।

१.२. जीवन

१. जन्म

'कृष्णा सोबती का जन्म १८ फ़रवरी १९२५ को हुआ था। अब गुजराल ज़िला पाकिस्तान का हिस्सा है। जब भारत-पाकिस्तान का विभाजन हुआ तब पश्चिम पंजाब में स्थित गुजराल भारत देश से विभाजित होकर पाकिस्तान में शामिल हो गया। जो वातावरण विभाजन के समय बना उसका प्रभाव लेखिका पर भी पड़ा।

२. परिवार

कृष्णा सोबती पंजाबी होने के कारण उनकी लेखनी में पंजाबी संस्कृति की झलक दिखाई पड़ती है। कृष्णा सोबती के पिता का नाम 'दिवान पृथ्वी राज सोबती' और माता का नाम दुर्गा देवी पृथ्वी राज सोबती था। दिवान सोबती की शिक्षा अंग्रेजी परिवेश में हुई। वे ब्रिटिश काल में दिल्ली एवं शिमला के सचिवालय में मुख्य पद पर कार्यरत थे।

कृष्णा सोबती जी की माता जी दुर्गा सोबती ज्यादा पढ़ी लिखी नहीं थी, लेकिन उन्होंने अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देकर पाला पोसा था। उनकी कुल चार संताने थी। तीन लड़कियाँ और एक लड़का। बड़ी बेटी राज चोपड़ा, दूसरी बेटी कृष्णा सोबती, तीसरी संतान जगदीश सोबती और चौथी बेटी सुषमा अब्बी है।

कृष्णा सोबती के घर में न ज्यादा अनुशासन था और ना ही खुलापन लेकिन जो संस्कार उन्हें उनके माता-पिता ने दिए वे उनके व्यक्तित्व में साफ़ दिखाई पड़ता है। बचपन में ही उनका परिचय पुस्तकों से हुआ था। उनके पिताजी उन्हें अच्छी-अच्छी पुस्तके पढ़कर सुनाते थे, जिसके कारण उनकी पुस्तकों के प्रति रुचि बनी रही। सोपति जी के पिताजी सेवा में थे और उनके परिवार के सभी सदस्य स्वभाव से बहुत अच्छे थे।

३. शिक्षा

कृष्णा सोबती की पढ़ाई लिखाई अनेक स्थानों पर हुई। जैसे दिल्ली, शिमला, लाहौर आदि। उनकी प्राथमिक शिक्षा उनके जन्म स्थान गुजराल में हुई। उच्च माध्यमिक शिक्षा लाहौर स्थित फ़तेहचंद कॉलेज में हुई, जब लेखिका पढ़ रही थी तभी देश का विभाजन हुआ। वह अपनी पढ़ाई करने के लिए होस्टल में रहती थी। लेकिन देश विभाजन का असर उनपर पड़ा। इसलिए वह कॉलेज की पढ़ाई अधूरी छोड़कर दिल्ली आ गई और अपनी डिग्री की पढ़ाई संपन्न की।

१.३. व्यक्तित्व

जिस तरह एक कलाकार की पहचान उसकी कला से होती है। उसी तरह एक लेखक की पहचान उसकी लेखनी से होती है। किसी भी साहित्यकार के व्यक्तित्व की झलक उनके साहित्य में भी देखने को मिलती है।

कृष्णा सोबती जी न अपने आपको गरीब समझती और न ही अमीर। वह एक खुद्दार औरत है। कृष्णा जी को देख तो पता चल जाता है कि वह पंजाब की बहुत ही सुंदर औरत है। वह पंजाब प्रान्त का सुंदर तथा सुदृढ़ता की दर्शन पद्धति है। कृष्णा सोबती एक सजग लेखिका तथा आधुनिक नारी है। वह एक जिंदादिल और निडर व्यक्तित्व वाली नारी है। उनके जीवन को जीने का दृष्टिकोण हमेशा सकारात्मक रहा है। यह हमें उनके कहानियों, उपन्यासों के द्वारा पता चलता है। लेखिका हमेशा उत्साही और हर समय प्रेरणा पानेवाली व्यक्तित्व अपने आप में रखती है।

कृष्णा सोबती का जीवन, रहन-सहन सीधा-सादा होने पर उन्हें सीधे-सादे लोग ही पसंद रहे हैं। लेखिका को हर किसी को जानने की ख्वाहिश रही है, उन्होंने कोशिश की है कि उनकी खुशियों के साथ-साथ, गम, उम्मीदों आदि बातों को भी जानने कि।

कृष्णा जी का व्यक्तित्व और निखरता है, उनको मिले संस्कारों की वजह से। उनके परिवार में कोई भेदभाव लड़का-लड़की को लेकर नहीं रहा था, इसी वजह से उन्होंने किसी को भी स्त्री या पुरुष की दृष्टि से न देखकर सब में मनुष्य का भाव रखती है। वह एक देश प्रेमी भी है। गाँव और शहर दोनों जगह पर समय व्यतीत करने की वजह से उनके जीवन में दोनों तरह का वातावरण दिखता है।

कृष्णा सोबती ने नारी मन को समझा है। उन्होंने अपने लिखने के माध्यम से नारी की समस्याएँ उनकी स्वतंत्रता आदि के बारे में लिखा। उनके व्यक्तित्व में पारदर्शिता दिखती है। कृष्णा जी के विचारों के साथ-साथ जीने का अंदाज भी स्वतंत्र है।

१.४. लेखन के प्रेरणास्रोत

किसी भी रचनाकार के लिए उनकी प्रेरणा निजी अनुभव या बाह्य जगत् से मिलती है। जिससे रचनाकार की रचना विकसित होने में सहायता मिलती है।

कृष्णा सोबती जी को बचपन में ही साहित्यिक संस्कार मिले थे। उनका प्रेरणास्रोत उनका अपना परिवार ही रहा है, यह उनकी रचनाओं को पढ़ते समय पता चलता है। कृष्णा सोबती का आलेख है 'मैं मेरा समय और मेरा रचना संसार' इससे उनकी रचनाओं में कहीं न कहीं अपना स्वत्व दिखाई देता है।

उनके परिवार के सभी सदस्यों को किताबों के प्रति विशेष रुचि रही है। कृष्णा सोबती जब छोटी थी तब उनके पिताजी, उन्हें और उनके भाई-बहनों को रात के वक्त कहानियाँ पढ़कर सुनते थे। सोबती जी कहती है ९ बजे हमारे कमरे की बत्ती बुझा दी जाती। बीच के दरवाजे का परदा उठा दिया जाता और अपने-अपने बिस्तर में लेटे हम पिताजी की गहरी गूँजती आवाज का इंतज़ार करते। सामने का जगमग जगमग कमरे से छनकर हलकी रोशनी हमारे बिछौनों पर आ बिछती और हम चाव से उछाह से, कभी भरी आँखों से शब्दों के अर्थ बीनते चले जाते। फूलवालों की सैर, गुलिस्ताँ बोस्ता, आनंदमठ, दुर्गादास राठौर, बंदबिरागी, बंकिम, प्रेमचंद, सुदर्शन और एक बड़ी दुनिया हमारे छोटे दिमागों में शौर मचाने लगी। '५ इन्हीं कारण उनको पढ़ने की आदत लग गई और लिखने की रुचि हो गई।

कृष्णा सोबती में जितनी भी कहानियाँ लिखी है जैसे 'सिवका बदल गया', बादलों के घेरे' इन कहानियों में कृष्णा जी की नानी का चित्रण हुआ है। कृष्णा जी के रचनाओं में जितने भी गाँव का चित्रण, संस्मरण, भावनाएँ आदि मिलता है वह सब उन्होंने खुद महसूस किया है। यह सब अंग है जिसको उन्होंने अपनी रचनाओं में वाणी दी है। कृष्णा सोबती की हर रचनाओं में एक जीवन चित्रित होता है।

१.५. साहित्य संसार

साठोतरी साहित्य में कृष्णा सोबती का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। उन्होंने साहित्य के हर एक विधा पर लिखा है। सोबती जी की रचनाओं का संक्षेप परिचय दिया जा रहा है।

. कहानी साहित्य

कृष्णा जी का केवल एक ही कहानी संग्रह है 'बादलों के घेरे' यह संग्रह १९९५ में प्रकाशित हुआ है। इसमें कुल २४ कहानियाँ हैं जिनके नाम इसप्रकार है- नफीसा (१९४४), लामा (१९४४), सिक्का बदल गया (१९४८), मेरी माँ कहाँ है (१९४९), डरो मत, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा (१९५०), खम्माधनी, अन्नदाता (१९५१), कामदार भीखमलाल (१९५२), बदली बरस गई (१९५२), एक दिन (१९५२), जिगरा की बात (१९५२), गुलाबजल गंडेरियाँ (१९५२), बहने (१९५२), कलगी (१९५२), अभी उसी दिन ही तो (१९५२), भोले बादशाह (१९५३), न गुल था, न चमन था (१९५३), पहाड़ो के साये तले (१९५३), देहरी सांझ (१९५३), टीलो ही टीलो (१९५४), दादी अम्मा (१९५४), बादलों के घेरे (१९५५), कुछ नहीं कोई नहीं (१९५५), दो बाँहे (१९५९)।

इन कहानियों को हम तीन भागों में बाँट सकते हैं-

• देश विभाजन से जुड़ी कहानियों जैसे सिक्का बदल गया, मेरी माँ कहाँ है, कलगी आदि।

• प्रेम और स्त्री पुरुष संबंधों से जुड़ी कहानियाँ जैसे बादलों के घेरे, देहरी साँझ आदि।

• ग्रामीण जीवन से जुड़ी कहानियाँ जैसे दादी अम्मा, भोले बादशाह आदि।

क) लामा-

लेखिका जब बच्ची थी तब वह खुद और पड़ोस के बच्चे मिलकर बूढ़े भिखारी लामा को चिढ़ाते रहते थे। बच्चों का वह आकर्षक केंद्र था। लेकिन एक दिन वह मर जाता है। उस वक्त लेखिका को जीवन और मृत्यु का अर्थ समझ में नहीं आया था। लेकिन जब भी उन्हें लामा की याद आती है तो वह संवेदनशील हो जाती है।

ख) सिक्का बदल गया-

इस कहानी का मूल कथ्य विभाजन की समस्याओं को लेकर हैं। शाहनी जो मुख्य पात्र है, जिसको मानवीय मूल्य बदल जाने की चिंता है।

ग) कलगी-

यह कहानी भारत-विभाजन पर आधारित है। अंग्रेजों और सिक्खों के बीच का युद्ध का चित्रण ही कलगी कहानी है। जोधसिंह के माथे की कलगी छोटीसी जागीर के मालिक सरदार जोधसिंह के माथे की कलगी नहीं थी। वह पंजाब के माथे की कलगी थी, जो फिरंगी के पैरों तले लोट रही थी।

घ) कामदार भिखमलाल-

इस कहानी का मुख्य पात्र भिखमलाल है। उसी का चित्रण किया गया है। वह होशियार थे, चालक थे, अपनी जिम्मेदारी से कभी नहीं भागते थे। जब वह शारीरिक रूप से अस्वस्थ हो गए थे तब भी अपना काम करते थे।

ङ) बदली बरस गई-

यह कहानी पारिवारिक जीवन से निराश, 'कल्याणी' की है। पति के मरने के बाद घरवालों के अत्याचारों से तंग आकर अपनी बच्ची को लेकर आश्रम में रहती है। लेकिन उसकी बेटी आजाद होकर रहना चाहती है। महाराज से आज्ञा लेकर वह खुली जिंदगी जीना पसंद करती है।

इस कहानी में पागलों की समस्या को प्रस्तुत किया गया है। पागल भोला खुद को बादशाह समझता है। उसे शादी करनी है। अंत में यह पागलखाने में माँ को ही अपनी समझकर पकड़ने के प्रयास में मर जाता है।

छ) बादलों के घेरे-

यह रवि और मन्नो के बीच की असफल प्रेम कहानी है। मन्नो अपनी बिमारी के कारण रवि का प्यार ठुकरा देती है। वह उससे कहती है कि जिसे वह संभाल नहीं सकता उसकी ओर हाथ मत बढ़ाओ। वह मरती है और रवि उसकी याद में जीता है।

ज) दादी अम्मा-

इस कहानी में संयुक्त परिवार की महत्ता बताई गई है। इस परिवार की कर्ता धर्ता दादी अम्मा पीपल के वृक्ष के समान है जिसकी जड़े अब पोते के रूप में फैलती है।

झ) कुछ नहीं कोई नहीं-

इस कहानी की नायिका शिवा है। जो अपने प्रेमी के खातिर पति और परिवार में सबसे संबंध तोड़ लेती है। वह अपने पति के मित्र आनंद के साथ रहती है। लेकिन जब वह मरता है तो उसकी जिंदगी एक बेबस औरत की तरह होती है।

कृष्णा सोबती जी ने थोड़ी ही कहानियों लिखी लेकिन उनके विषयों में विविधता है जो कहानियाँ पढ़ते समय पता चलता हैं।

३. कविताएँ

कृष्णा सोबती की रुचि उपन्यास विधा में रही है, इसी के साथ-साथ उन्होंने अपने जीवन में कविताएँ लिखी हैं लेकिन बहुत कम। उनके द्वारा लिखित सोबती एक सोहबत' में निम्नलिखित कविताएँ प्रकाशित मिलती हैं-

क) प्यारे खास-

यह कविता २८ जुलाई १९०४ में लिखी है। प्रस्तुत कविता में तथाकथित नेता लोगों पर व्यंग्य किया है।

ख) गलबांहियों से उमड़ती-

इस कविता में पंजाब के आंचल का चित्रण है। साथ-साथ देश विभाजन का भी चित्रण हुआ है।

४. संस्मरण साहित्य

कृष्णा सोबती जी ने कविता, कहानियों से ज्यादा संस्मरण लिखे हैं। उनके द्वारा रचित दो संस्मरण ग्रन्थ हैं। जॉब निम्नलिखित है-

क) हम हशमत भाग - १

प्रस्तुत संस्मरण में हर चित्र घटना है और हर चेहरा नायक। समाज के विभिन्न वर्ग इस रचना में चित्रों के साथ प्रस्तुत है। एक चित्र, पत्रकार, साहित्यकार, बुद्धिजीवी एवं व्यवसायी मित्र हैं। इसमें निर्मल वर्मा, भीष्म साहनी, मिया नसीरुद्दीन, नागाअर्जुन आदि हैं।

ख) हम हशमत भाग-२

इसमें सोबती जी ने जिन महान हस्तियों को याद किया हैं, उनमें नामवर सिंह, अशोक वाजपयी, अज्ञेय, मंटो, नासिरा शर्मा, कमलेश्वर आदि महत्वपूर्ण हैं।

अंततः हम समग्र रूप से सोबती जी के जीवन को देखे तो वह एक उत्कृष्ट लेखिका है, जिन्होंने अपने जीवन में साहित्य को महत्व दिया। उन्होंने साहित्य में अपनी अमिट छाप छोडी है।

संदर्भ सूची

१. कृष्णा सोबती की कथा भाषा डॉ. एन जयश्री पृ. संख्या ११।

२. कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में चित्रित ग्रामीण जीवन डॉ. सौ. सुरेखा लक्षमण तांबे पृ. संख्या १९-२०।

३. सोबती एक सोहबत कृष्णा सोबती पृ. संख्या ४०६।

४. कृष्णा सोबती : व्यक्तित्व और कृतित्व डॉ. शंकर ए. राठोड - पृ. संख्या २१।

द्वितीय अध्याय

'बादलों के घेरे' कहानी संग्रह में चित्रित समस्याएँ

'बादलों के घेरे' कहानी संग्रह में चित्रित समस्याएँ

समस्या का और मनुष्य का गहरा रिश्ता रहा है। हर एक मनुष्य के जीवन में कोई न कोई समस्या सताती रहती है। ऐसा कोई भी मनुष्य नहीं है जिसके जीवन में कोई भी समस्या नहीं है। 'समस्या' होने से ही मनुष्य को जीवन से लड़ने की प्रेरणा मिलती है। यदि कोई भी समस्या मनुष्य के जीवन में नहीं हो तो उसका जीवन निरर्थक हो जाता है। मनुष्य जितना समस्याओं से मुक्ति पाना चाहता है उतना ही उसमें और उलझ जाता है। मनुष्य के जीवन में समस्या आने पर उन समस्याओं से प्रेरित होकर उससे लड़ता तथा सहकर सफलता तक पहुंच जाता है। साथ ही समस्या ही मनुष्य को उसके लक्ष्य तक पहुँचाने में मदद करती है।

हर एक मनुष्य को जीवन में शुरू से लेकर परिस्थितियों के साथ-साथ बहुत सी परिवर्तित समस्याओं का सामना करना पड़ता है। आज के समय में मनुष्य को पर्यावरण की समस्या, भूमंडलीकरण की समस्या, प्राकृतिक बदलावों के कारण होने वाली समस्या जैसी त्सुनामी, भूकंप आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि बदलते युग के साथ समस्याएँ भी बदलती रहती है।

प्रस्तुत कहानी संग्रह की कहानियों में चित्रित समस्याएँ :

'बादलों के घेरे' कहानी संग्रह में कृष्णा सोबती ने विभिन्न समस्याओं का चित्रण किया है। उनकी कहानियों में समाज के हर स्तर की समस्याओं का अंकन किया गया है। उनकी समस्याओं का चित्रण निम्नलिखित मुद्दों के अंतर्गत देखेंगे-

सामाजिक समस्या :

कृष्णा सोबती के 'बादलों के के घेरै कहानी संग्रह में चित्रित सामाजिक समस्याओं का निम्नलिखित मुद्दों के अंतर्गत देखा जा सकता है।

पारिवारिक संघर्ष :

कृष्णा सोबती की अधिकतर कहानियों में पारिवारिक संघर्ष को उजागर किया है। परिवार में जितने भी रिश्ते, रस्म-रिवाज इनमें कितने बदलाव आए है इसका चित्रण 'दादी अम्मा' कहानी में किया है। इसमें लेखिका कृष्णा सोबती जी ने दो पीढ़ियों के संघर्ष को दर्शाया है। जैसे 'दादी अम्मा' कहानी में दादी का चित्रण इस तरह चित्रित किया है "और अम्मा तो सचमुच उठने बैठने बोलता है, झगड़ती है, झुकी कमर पर हाथ रखकर वह चारपाई से उठकर बाहर आती है तो जो भी सामने हो उसे पर बरसने लगती है।"१

इस प्रकार यहां पर पारिवारिक संघर्ष को स्पष्ट किया है। 'बहने' कहानी में पारिवारिक मतभेद को उजागर किया है। 'बड़ी बहन' की सास अपने मतानुसार ही दूसरों को नाँपती है। इसी कारण अपने पोते की शादी में वह दूसरों को कम दिखाने से पीछे नहीं हटती।

'भोले बादशाह' कहानी में भी पारिवारिक संघर्ष का चित्रण किया गया है। बेटा तथा बहू अपनी सास तथा पागल भाई से दुर्व्यवहार करते हैं। जब वह बीमार होता है तो वह उसकी बीमारी को नजरअंदाज करते है। पागल भाई उनको बोझ-सा लगने लगता है।

द्वि-पत्नीत्व :

भारतीय परंपरा के अनुसार चलती आ रही द्विपत्नीत्व की समस्या को एक दिन इस कहानी में दर्शाया गया है। धर्मपाल अपनी पहली पत्नी होते हुए भी दूसरी शादी करता है। लेकिन उसकी पहली पत्नी शीला को इसमें कोई बुराई नजर नहीं आती। क्योंकि वह एक भारतीय नारी है। लेकिन धर्मपाल की दूसरी पत्नी श्यामा का शीला के प्रति व्यवहार बहुत ही निराशाजनक था। इस संदर्भ में यह लिखा गया है कि "अपनी बेबसी, पति की निर्दयता और सौत की वह उपहासजनक हँसी आँखों में उतर आई।"२ इस संदर्भ से स्पष्ट होता है कि शीला को कितने अत्याचार सहने पड़ते हैं लेकिन वह इसका कभी विरोध नहीं करती। चुपचाप अपने गम को सहती रहती है। किसी से कुछ नहीं कहती।

स्त्री-पुरुष संबंध में द्वंद्व

लेखिका कृष्णा सोबती ने 'दादी अम्मा', 'कुछ नहीं कोई नहीं' और 'एक दिन' इन कहानियों के माध्यम से स्त्री-पुरुष संबंधों में द्वंद दिखाया है।

नारी को जीवन की संपूर्णता में जीना न केवल असंभव होता है; बल्कि संपर्क में आने वाले व्यक्ति के लिए खंड-खंड में जीने का सिलसिला भी पैदा होता है। कुछ नहीं कोई नहीं कहानी में इसी सत्य को दर्शाया है। शिवा रूप कि पत्नी है और वह अपने पति रूप को छोड़कर आनंद के पास चली जाती है। लेकिन जब वह आनंद के रहती है तब उसे यह एहसास होता है कि वह रूप के साथ ही खुश थी। आनंद के साथ रहते वह अपने आप को अजीब-सा महसूस करने है। वह बहुत पछताती है। अंत में आनंद के मरने के बाद वह अकेलेपन को

अपनाती है। अकेले रहना वह पसंद करती है क्योंकि उसने बहुत बड़ी गलती कि थी एक पराये मर्द के लिए अपने पति और बच्चो को छोड़कर किसी और के पास जाने कि।

'एक दिन' इस कहानी की श्यामा अपने पति धर्मपाल को हमेशा संदेह की दृष्टि से देखती है। "पति को अकेला छोड़ जाएगी? अकेला... नहीं। शीला... वह इस घर से बाहर तो नहीं पर पति को तो उसने उसे और मुंह करते भी नहीं देखा। पर.. 'पर' पर वह अटक जाती है।"१ इस तरह से श्यामा अपने पति को संदेह की दृष्टि से देखती है। श्यामा बहुत डरती थी इसीलिए वह अपने पति को शीला से बात भी करने नहीं देती थी। इस तरह कृष्णा सोबती ने स्त्री-पुरुष संबंधों को अपनी इस कहानियों में चित्रित किया है।

दो पीढ़ियों का संघर्ष :

सभी परिवारों में दो पीढ़ीयों के बीच आचार-विचार, व्यवहार, मान्यताएं आदि में संघर्ष दिखाई देता है अगर उनके घर में बड़े बुजुर्ग हो तो । हमेशा एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को कोसती रहती है। वे अपने बदलते मूल्य एक दूसरे पर सिर्फ थोंपना जानते हैं। लेकिन कोई भी पीढ़ी उसे व्यवहार में लाना नहीं चाहती। इस तरह का संघर्ष कृष्णा सोबती की निम्नलिखित कहानियों में दिखाई देता है।

'दादी अम्मा' इस कहानी की दादी अपनी परंपराएँ भूलना नहीं चाहती और ना ही बदलना चाहती है। और बदलते मूल्यों का स्वीकार तो बिलकुल भी नहीं करना चाहती। दादी चाहती है कि उसकी बहू भी उसी के बने बनाए रास्ते पर चले। लेकिन बहू दादी के बने बनाये परंपराओं को मानने को तैयार नहीं है। जैसे विवेच्य कहानी में सास अपनी बहू से कहती है-

"बहू! फिर तुम्हें तो मैं पराई बेटी ही करके मानती रही हूं।"१ इसी तरह से दो पीढ़ीयों में संघर्ष कृष्णा सोबती की कहानियों में देखने को मिलता है।

मनोवैज्ञानिक :

कृष्णा सोबती ने 'भोले बादशाह' इस कहानी के माध्यम से पागल व्यक्ति की मानसिकता पर प्रकाश डाला है।

कहानी का प्रमुख पात्र 'भोला' एक पागल है। जो अपने पागलपन के कारण दिन-रात भूखा-प्यासा गांव की गलियों में भटकता रहता है। जिस घड़ी इसका चित्त ठिकाने होता है, तो कौन कहता है कि दिमाग में कोई फेर है।"२ इस संदर्भ से स्पष्ट हो जाता है कि जब भोला का दिमाग शांत होता है तब वह अच्छे लोगों की तरह पेश आता है। लेकिन जब उसके दिमाग पर पागलपन सवार होता है तब वह इतनी बुरी हरकतें करता है जिससे सारा गांव तथा घर के लोग परेशान हो जाते हैं। इस तरह से पूरी कहानी भोले बादशाह की मनोवैज्ञानिकता को लेकर प्रस्तुत की गई है।

बीमारी की समस्या :

यह समस्या 'बादलों के घेरे' तथा 'नफीसा' इन दो कहानियों में दिखाई देती है। 'बादलों के घेरे' इस कहानी में पहले मन्नो क्षयरोग से पीड़ित हो जाती है। तब उसे कोई छूता तक नहीं। हर कोई उससे दूर दूर रहते हैं उसके क्षयरोग के कारण। जब वह बुआ के घर दो दिन रहने के लिए आती है तब बुआ बच्चों को लेकर घर से बाहर चली जाती है। बुआ मन्नो के कमरे में किराए का सामान लाती है। "बरामदे में से कुली फर्नीचर निकल रहे थे। मन धक्का खाकर रह गया। तो मन्नो के कमरे की सजावट, सुख- सुविधा, सब किराए पर बुआ ने जुटाए थे।"१ इस

संदर्भ से स्पष्ट होता है कि बुआ मन्नो को घर का सामान को हाथ तक लगाने नहीं देती थी। मन्नो को बच्चें न छुए यह बुआ देखती रहती थी।

मन्नो की मृत्यु के पश्चात कुछ सालों के बाद रवि भी इसी बीमारी का शिकार हो जाता है। रवि और मन्नो एक दूसरे से प्यार करते थे लेकिन मन्नों को क्षयरोग की बीमारी होने के कारण वे दोनों एक दूसरे को अपने प्यार का इज़हार नहीं कर पाए। जब रवि को भी यही बीमारी हुयी तब वह भी मन्नो की तरह भुवाली की कॉटेज में अकेला पड़ा रहता है। उसकी पत्नी तथा बच्चे उसे देखने आते तो हैं लेकिन उसे दूर से ही देखकर चले जाते हैं। मीरा बच्चों को दूर से ही उसे देखने तथा प्रणाम करने को कहती है। यहां पर कृष्णा सोबती ने क्षयरोग का चित्रण किया है। क्षयरोग होने के कारण मरीज को अपनी बची हुई जिंदगी किस तरह अकेले ही काटनी पड़ती है इसका चित्रण कृष्णा सोबती ने प्रस्तुत कहानी में किया है।

'नफ़ीसा' कहानी में भी कृष्णा सोबती ने इसी समस्या को चित्रित किया है। नफीसा सात साल की बच्ची है और वह कुछ ही दिनों की मेहमान है। वह अस्पताल में अकेली ही अपनी जिंदगी बिता रही है। वह सोचती है कि माँ मेरे पास क्यों नहीं रहती। इस तरह से कृष्णा सोबती ने उपर्युक्त दो कहानियों के माध्यम से 'बीमारी' की समस्या को उजागर किया है।

असफल प्रेम :

'बादलों के घेरे' कहानी में रवि तथा मन्नो एक दूसरे से मन ही मन प्रेम करते हैं। मन्नो क्षयरोगी होने के कारण वह अपने प्रेम का इज़हार नहीं करती तथा रवि से बातचीत भी कम करती है। रवि भी मन्नो से प्रेम करता है लेकिन बुआ के समझाने पर वहाँ से मन्नो को छोड़कर चला जाता है। रवि कि शादी के दस साल बाद जब रवि कि मुलाक़ात बुआ से होती है तब

उसे मन्नो के प्रेम के बारे में पता चलता है। बुआ रवि से कहती है, "बुआ आँख पोंछती कुछ सोचती रही, फिर दर्द से बोली, 'रवि, एक बार उसे पत्र तो लिखते। 'मैं रुमाल से रुलाई सोखने लगा।

"तुम्हारे नाम का एक पार्सल छोड़ गई थी आलमारी में। खोला तो जर्सी थी।"

इसतरह बहुत साल बीत जाने के बाद रवि को मन्नो के प्रेम के बारे में पता चलता है कि मन्नो भी रवि से मन ही मन प्रेम करती थी। जब रवि स्वयं क्षयरोग से पीड़ित हो जाता है तब उसे मीरा नहीं मन्नो ही सगी लगती है। प्रस्तुत कहानी में कृष्णा सोबती ने असफल प्रेम को उजागर किया है।

रिश्ते-नातों में आए बदलाव :

मन्नो जब क्षयरोग से पीड़ित होकर बुआ के घर दो दिन रहने को आती है तब बुआ उसे देखकर पहले बच्चो को दूर रखती है और बच्चो को मन्नो से दूर ही रहने को कहती है। पहले बुआ मन्नो का बहुत ख्याल रखती थी। उससे बहुत प्रेम करती थी। पर जब से वह क्षयरोग से ग्रस्त हो गयी तब से उसके साथ अलग ही बर्ताव करने लगी।

अंत में जब रवि इस बीमारी का शिकार हुआ तब वह भुवाली की कॉटेज में अकेला पड़ा रहता था। उसकी पत्नी बच्चे कभी- कभी उससे मिलने आते थे और दूर से देखकर चले जाते थे। उसकी बीमारी की वजह से उनके बिच के संबंध में दूरियाँ आने लगी। तब रवि सोचता है कि जिस मीरा को मैंने वर्षों से जाना है, वह अब मेरे पास-सी नहीं लगती, अपनी सी नहीं लगती। उसे मैंने छू-छूकर छुआ था, चूम चूमकर चूमा था, पर मन पर जब मोह और प्यार की उछलन आती है, तो मीरा नहीं, मन्नो की आँखें ही सगी लगती हैं। "१ इस तरह बीमारी के

कारण रिश्तों में आए बदलावों का चित्रण कृष्णा सोबती ने अपनी कहानी 'बादलों के घेरे' में किया है।

विधवा की समस्या :

कृष्णा सोबती ने 'बहनें' और 'बदली बरस गई इन दो कहानियों में इस समस्या को उजागर किया है।

'बहनें कहानी की मॅझली बहन विधवा है। वह अपनी बड़ी बहन के कहने पर उसके बेटे की शादी के लिए आती है। आते वक्त बहन तथा उसके बेटे के लिए ढ़ेर सारा सामान लाती है। लेकिन बड़ी बहन की सास उसे कोसने का एक भी मौका नहीं छोड़ती। वह कहती है, "बेटी, सास-ससुर तो अच्छे हैं? सुना था, कारोबार के दो हिस्से हो गए हैं। बेटी, देवर-देवरानियाँ तो वहीं हैं न? छोटे देवर के यहाँ लड़का हुआ है, बधाई हो! उस दिन शायद बहू ही कह रही थी कि देवर के लड़के को मँझली गोद ले रही है।"२ इस तरह के ताने देती रहती है। उसे बहुत ठेस पहुँचती है इन सभी बातों से। इसी कारण वह बारात में शामिल भी नहीं होती और दूर से ही बरात को देखती रहती।

'बदली बरस गई कहानी में कल्याणी के पिता गुजर जाने के बाद उसकी माँ पर सास तथा ननद बहुत अत्याचार करते हैं। इन अत्याचारों से तंग आकर वह अपनी बेटी को लेकर आश्रम में रहने जाती है। वहाँ जाने के बाद वह अपना रूप बदल देती है। इस संदर्भ में कल्याणी कहती है, "दूसरे दिन जब देर गए उठकर वह कोठरी के द्वार पर आ खड़ी हुई तो माँ के तन पर गीली धोती थी-माथे पर चन्दन का टीका था और... और जब माँ कोठरी में लौटी तो सिर पर घने काले केश नहीं थे। धोती का पल्ला बालों से नहीं, मस्तक से लगा रह गया था।" इसतरह

से कल्याणी की माँ अपना पहला रूप बदलकर साध्वी माँ बन जाती है। विधवा होने के कारण नारी को बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। गलती न होने पर भी उन्ही को बहुत कुछ सुनना पड़ता है। लोग उन्हें इस प्रकार भला बुरा कहते है मानो कि उन्होंने ही खुद जानबूजकर अपने पतियों का क़त्ल किया हो। और विधवा होने का करा वे खुद हो। इसका चित्रण कृष्णा सोबती ने इन दो कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। MPS

निःसंतान की समस्या :

'बहनें कहानी की मॅझली बहन विधवा होने के साथ-साथ निःसंतान भी है। वह जब बहन के बेटे की शादी में आती है तो उसे बड़ी बहन की सास ताने देती रहती है। विधवा होने के कारण उसे कोई संतान न थी। उसे बहुत दुख होता था। लेकिन वह अपना ग़म छिपाती है और चुपचाप लोगों के ताने सहती है। बड़ी बहन की सास उसे कहती है कि "अपनी बहन को ही देखो, पूरे दस साल बाद यह लड़का हुआ था। बहू का भाग ही समझो कि मालिक ने उसकी सुन ली। हाँ, मॅझली, तुम भी कुछ सोचो। इस शरीर का क्या पता ? हाथ से कोई काम करम कर डालो। देवर के लड़के को ही गोद लो...।" ऐसी बातें बड़ी बहन की सास उससे करती है। मंझली इस बात का कोई जवाब नहीं देती। चुपचाप रहती है। उसका यह दर्द उसकी छोटी बहन ही समझती है।

युवती की समस्या :

'बदली बरस गई' कहानी की 'कल्याणी' अब बड़ी हो चुकी है। अब वह आश्रम के वातावरण से तंग आ गई है। जब वह आश्रम के बाहर जाती है तो उसके चेहरे पर एक अलग ही खुशी झलकती है। कल्याणी जब छोटी थी तब उसकी माँ उसे लेकर आश्रम में आई थी।

"सखी सहेलियों से खेलनेवाले दिनों के एक दिन अनायास जब उसने अपने आप को इस आश्रम में पाया, तो मन में नहीं आँखों में विस्मय फैलकर रह गया।"। आश्रम में रहने आने के बाद उसकी माँ 'मैं' न रहकर साध्वी माँ बन जाती है। आश्रम में कल्याणी अपने आप को बहुत ही अकेला महसूस करती है। एक दिन वह यह निर्णय लेती है कि वह अब इस आश्रम में नहीं रहेगी। वह आश्रम के बाहर की जिंदगी को देखेगी और वह वहाँ से चले जाने का निर्णय अपनी माँ तथा महाराज को सुनाती है। तब महाराज उसे जाने के लिए अनुमति देते है।

प्रस्तुत कहानी में कृष्णा सोबती ने एक युवती को केंद्रबिंदू बनाकर उस युवती की समस्या को चित्रित किया है।

भूख की समस्या :

'गुलाबजल गॅंडेरियाँ कहानी की 'धन्नो' अब बूढ़ी हो चूकी है। उसका सगा कोई नहीं है। उसकी देह अब थक चुकी हैं। वह अकेली है। साथ ही गरीबी के कारण खाने की चाह होते हुए भी वह कुछ खा नहीं सकती। गँडेरी गुलाब का नाम सुनते ही वह अतीत की स्मृतियों में खो जाती है। उसके ससुर बरफ बेचने का काम करते थे। बरफ़ का नाम सुनते ही उसके मुँह में पानी आता है। वह भूख के कारण सभी मिठाइयों को याद करती है। जैसे- "मलाई की कुलफ़ी, जामुन, मीठा मेवा, पेड का पका शहतूत... बना दिया जलेबा, बनानेवालों ने, लगा दिए... तरावट से... धन्नो का गल भींग गया।" इसतरह से पैसे की कमी तथा गरीबी के कारण धन्नो अपने मन में खाने की चाह रखकर मृत हो जाती है।

बुढ़ापे की समस्या :

कृष्णा सोबती ने इस समस्या को अपनी दो कहानियाँ 'दादी अम्मा' और 'अभी उसी दिन ही तो में चित्रित किया है।

'दादी अम्मा' कहानी की दादी अब बूढी हो चुकी है। परिवार में अब उसका कोई सुनता नहीं सब लोग उसका मजाक उड़ाते हैं। दादी को लगता है कि अब उसका बेटा भी उसे नज़र अंदाज़ करने लगा है। वह सबसे झगड़ा करती रहती है। दादी बीमार होती है लेकिन उसकी ओर कोई देखता नहीं दादी चुपचाप रहने लगती हैं। "आज दादी को न देखकर छोटी बेटी हँसकर मँझली भाभी से बोली, भाभी, दादी अम्मा के पास अब शायद कोई लड़ने-झगड़ने की बात नहीं रह गई, नहीं तो अब तक कई बार चक्कर लगाती।" इस तरह से दादी अम्मा का परिवार के सभी लोग मजाक उड़ाते हैं।

'अभी उसी दिन ही तो' कहानी की सकुन्ती अब बूढ़ी हो गई है। जब नए साल का दिन आता है तो परिवार के सभी लोग यह दिन मनाने के लिए बाहर जाते हैं। सकुन्ती अकेली ही घर में रहती है। वह बच्चों की राह देखती रहती है। बच्चों के आने तक वह सो नहीं पाती सिर्फ सोने की कोशिश करती रहती है। साथ ही अतीत की स्मृतियों को कुरेदती रहती है। उसे अपने दिन याद आते है। बच्चों की आहट सुनते ही वह जाग जाती है। जब बच्चे अपने कमरे में चले जाते है तो उसे लगता है कि उसे कोई पूछनेवाला नहीं है। लेकिन जब उसे बड़ा बेटा मिलने आता है तब वह सोचती है कि उसका बड़ा बेटा उसे भूला नहीं। अंत में वह यह सोचती है कि "अभी उसी दिन तो आँखों के अन्दर उसके बचपन की तस्वीरें घूम गई और पलकों के बाहर आँसुओं की अनछुई दो लड़ियाँ जिन्हें पोंछनेवाली आज की ठिठुरती रात के सिवाय और

कोई न था।" इसतरह से सकुन्ती अपने आप को अकेला महसूस करती है। बुढापे की वजह से उसे लगता है कि अब उसका कोई नहीं है। यहाँ पर कृष्णा सोबती ने नारी की ढलती उम्र के साथ-साथ परिवार में भी उसका स्थान किसतरह से घटता है इसका चित्रण इस कहानी में किया है।

नारी संबंधी समस्याओं का चित्रण :

कृष्णा सोबती ने नारी को विविध रूपों में अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। नारी को कभी पत्नी, कभी प्रेमिका, माँ, सास, बहु, साध्वी आदि रूपों में प्रस्तुत किया है। नारी को विविध संघर्षों और अपने घरवालों कि समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। अनेक और बहुत सारी मुसीबतें झेलनी पड़ती हैं। इसका चित्रण किया गया है।

'दादी अम्मा' कहानी में सास-बहू के रिश्ते के आधार पर अनेक समस्याओं को दर्शाया है। सास को जो सम्मान और परिवार में होनेवाला स्थान नहीं मिलता है तब वह बहुत दुखी हो जाती है। तब उसे लगता है कि उसकी एहमियत खत्म हो चुकी है अब उसकी कोई नहीं सुनता । "दादी अम्मा कड़वे मन से अपनी चारपाई पर जा पड़ी। बुढ़ापे की उम्र भी कैसी होती है। जीते जी मन से संग टूट जाता है। कोई पूछता नहीं, जानती नहीं।" इसतरह से नारी की इस समस्या को दादी अम्मा' कहानी में प्रस्तुत किया है।

'भोले बादशाह' कहानी में माँ की व्यथा को स्पष्ट किया है। जो अपने पागल बेटे को छोड़ नहीं सकती और दूसरे बेटे की बात मान नहीं सकती। माँ अपने दोनों बेटों के बीच उलझी हुई है। उसकी यही मानसिक दुविधा का चित्रण कृष्णा सोबती ने यहाँ प्रस्तुत किया है। साथ

ही 'बहनें, कुछ नहीं कोई नहीं, 'गुलाबजल गँडेरियाँ, सिक्का बदल गया', 'एक दिन' और 'टीलो ही टीलो' जैसी कहानियों में यह समस्या उभर आई है।

अकेलापन :

लेखिका कृष्णा सोबती की कहानियों की यह विशेषता रही है कि इन कहानियों के प्रमुख पात्र अपने में और समय में जी रहे हैं।

'बादलों के घेरे' कहानी का रवि अपनी बीमारी क्षयरोग की वजह से अकेला है। "अकेलेपन से घबराकर जब मैं बाहर देखता हूँ तो धुन्ध भरे बादलों के घेरों में घुँघराले बालोंवाला वहीं चेहरा दीखता है... वहीं..." इस संदर्भ से स्पष्ट हो जाता है कि आस-पास के समाज से और अपने घर परिवार से जब व्यक्ति अकेला हो जाता है तब भविष्य के प्रति उसकी आस्था मुरझा जाती है।

'कुछ नहीं कोई नहीं' कहानी की शिवा भी अंत में अकेलेपन को स्वीकार करती है। "फिर न कभी घर देखूँगी... न घर का सामान, न सामान से लिपटी अतीत की स्मृतियाँ...। कहाँ रहूँगी, कहाँ जाऊँगी, कुछ पता नहीं।" इसतरह से शिवा अंत में अकेलेपन में अपना जीवन बिताना चाहती है। सब कुछ होकर भी सब कुछ खोने का दुख उसके मन में हमेशा रहेगा।'अभी उसी दिन ही तो' कहानी की सकुन्ती भी इस समस्या से पीड़ित है। वह भी अपने आप को बहुत अकेला महसूस करती है। उसके बेटे उसके साथ उतना समय न बिताने पर और उसके साथ न ठीक से बात करने पर उसे लगता है कि उसके बेटे तथा परिवार के लोग उसे भूल चुके हैं। वह भी अकेलेपन का शिकार हो चुकी हैं। अकेलेपन में बैठी-बैठी वह अपना आज तथा अतीत दोनों की तुलना करती रहती है।

राजनीतिक समस्या :

'बादलों के घेरे कहानी संग्रह में कृष्णा सोबती ने राजनीतिक बदलाव का चित्रण किया है। इस समस्या पर निम्नलिखित कहानी के आधार पर प्रकाश डाला जा सकता है।

'खम्माघणी, अन्नदाता' कहानी में समाज में आए परिवर्तन का चित्रण किया है। । राजा का राज्य अब लोकराज्य बननेवाला है यह सुनकर राजा की मानसिक स्थिति का चित्रण कहानी में किया है। "राजा का राज्य क्या बस यों ही चला जाएगा? सत्ता का अधिकार और अधिकार का प्रभुत्व सब-कुछ बदल जाएगा?"। इस संदर्भ से स्पष्ट होता है कि राजा को सिर्फ अपनी कुर्सी से मतलब है। वह सिर्फ अपने बारे में ही सोच रहा है। स्वार्थी हो चला है। वह चाहता है कि उसका राज्य लोकराज्य न बने। जनता अपनी भूख तथा ग़रीबी से लड़ती है तो राजा आराम की जिंदगी बिताता है। राजा को अपने जनता की नहीं अपनी खुदकी फ़िक्र ज्यादा है। लेकिन बाद में वहीं जनता राजा के लिए कितनी महत्त्वपूर्ण है इसका एहसास राजा को होता है। लेकिन अब जनता ही राजा को राज्य से बाहर निकालती है। उपर्युक्त विवेचन से राजनीतिक समस्या को उजागर किया है।

देश विभाजन की समस्या :

कृष्णा सोबती ने अपनी कहानियों का लेखन देश को आजादी मिलने के बाद किया है। इसीलिए उनकी कहानियों में देश विभाजन के समय आम लोगों को किन-किन मुसीबतों का सामना करना पड़ा इसका चित्रण उन्होंने अपनी कहानियों में बहुत ही मार्मिकढंग से किया है।

'डरो मत, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा' कहानी में आज़ादी के बाद जब लोगों को अपने-अपने देश भेजा जा रहा था तब हिंदू-मुस्लिम लोगों में हुई मारपीट का चित्रण किया है। किस तरह उनके बीच मार-पीट होने पर किस प्रकार का माहौल बना यह इस कहानी में दिखाया है।" आकाश के मोती भू पर फूल बनकर खिल गए और 'एक दिन' मारो-मारो, काटो, 'अल्ला हो अकबर', 'हर-हर महादेव... बहार के गुलशन को रौंदते हुए वह हजारों कदम, खून में तैरती हुई वह आँखे और हथियारों को तौलते हुए वह हाथ...।" इस संदर्भ से स्पष्ट हो जाता है कि लोग एकदूसरे का खून करने के लिए उतारू हुए थे। एक युवक एक युवती की जान बचाने का वचन देता है लेकिन उसे बचाने के लिए वह अंत तक कोशिश करता है। लेकिन लोग उसे ही मारते है और एक दिन उसके बेजान शरीर को कैंप में लाया जाता है। वह युवक मरते समय भी उसकी रक्षा करने का वादा करता रहता है। इसतरह देश-विभाजन की समस्या का चित्रण इस कहानी में दिखाई देता है।

'मेरी माँ कहाँ...' कहानी में भी इसी समस्या को चित्रित किया है। यूनुस खाँ एक बच्ची की जान बचाने के लिए उसे अस्पताल ले जाता है। वह बच्ची ठीक हो जाती है तो उसे पता चलता है कि यूनुस खाँ ने ही उसके परिवार की हत्या की है। यहाँ पर देश विभाजन के समय लोगों की स्थिति किसतरह से रही होगी इसका चित्रण इन दो कहानियों के माध्यम से कृष्णा सोबती ने किया है।

आम लोगों की समस्या :

कृष्णा सोबती ने अपनी कहानियों में आम लोगों की समस्याओं को भी चित्रित किया है। 'शम्मोजान' एक तवायफ है। उसे मालूम है कि आज आजादी का दिन है। इसीलिए सारे

नगर को आज सजाया गया है। इसी वजह से वह अपनी दुकान भी सजाती है। मुन्नी शम्मोजान से आज के दिन के बारे में पूछती है तब वह बताती है कि आज आजादी का दिन है। यह सुनकर मुन्नी शम्मोजान से कहती है, "क्या कहा, आजादी ? लोगों को आज मिल रही है आजादी! आजादी तो हमारे पास है। हम-सा आजाद कौन होगा, शम्मोजान" इसतरह से देश आजाद होने के बावजूद भी उसमें रहने वाले लोग क्या आज भी आजाद है? यह सोचनीय है। आज भी कुछ लोग ऐसे हैं जिनको आज़ादी क्या हैं? क्यों है? कौन है? ऐसे सवाल करते हैं जिनको पता ही नहीं कि आज़ादी क्या है।

इस कहानी में आम लोगों को आज तक आजादी का मतलब ही मालूम नहीं है। आम लोग इन बातों से बहुत ही दूर रहते हैं।

धार्मिक समस्या :

कृष्णा सोबती की कहानियों में ज़्यादातर हिंदू-मुस्लिम समाज का वर्णन दिखाई देता है। साथ ही देश विभाजन का भी चित्रण दिखाई देता है। उनकी 'डरो मत, मैं तुम्हारे रक्षा करूँगा, 'मेरी माँ कहाँ... आदि कहानियों में इस पर प्रकाश डाला जा सकता है। साथ ही लोकरूढ़ी, लोकाचार, परंपराएँ आदि का भी विश्लेषण किया है।

'दादी अम्मा कहानी की दादी अपनी परंपरा के अनुसार ही चलना जानती है। अपने पोते की शादी में वह कहती है कि "मेरे अपने ब्याह में मायके से पचास तोले का रानीहार चढ़ाया था। तुम्हें याद नहीं, तुम्हारे ससुर को कहकर उसी के भारी जडाउँ कंगन बनवाएँ थे तुम्हारे ब्याह में। इसतरह से दादी अपने मायके का बड़प्पन दिखाती है।

'बहनें कहानी में शादी में होनेवाले रस्म-रिवाज का वर्णन किया है। "मँझली सिर पर कपड़ा किए द्वार पर खड़ी है। आस-पास सहेलियों की भीड़ है। उसके मेहेंदी लगे हाथों में फूलमाला काँप रही है।" इसतरह से यहाँ पर कृष्णा सोबती ने शादी में होनेवाली रस्म को वर्णित किया है।

उपर्युक्त विवेचन से विवेच्य कहानियों में धार्मिक समस्या की और कृष्णा सोबती ने परिलक्षित किया है।

आर्थिक समस्या :

कृष्णा सोबती की कहानियाँ लोगों की आर्थिक समस्या को उजागर करती है।

'गुलाबजल गैंडेरियाँ' कहानी की धन्नो को अपनी आर्थिक विपन्नता के कारण कैसे जीवन बीताना पड़ता है इस का इस कहानी में वर्णित किया है। पैसों के अभाव के कारण वह अपने मन की इच्छा तक पूरी नहीं कर पाती। "गुलाब मेवा... वह खाएगी, पर कहाँ से लेगी? कैसे लेगी? पैसे पैसे।" पैसों के कमी के कारण धन्नो खाने की चाह रखकर ही मृत हो जाती है।

'खम्माघणी, अन्नदाता!' कहानी की जनता भूख से बेहाल है। गरीबी के कारण उन्हें पेटभर खाना भी नसीब नहीं होता।

इन कहानियों के माध्यम से कृष्णा सोबती ने आर्थिक समस्या को उजागर किया है।

निष्कर्ष

कृष्णा सोबती ने 'बादलों के घेरे कहानीसंग्रह में सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक समस्याओं को उजागर किया है। कृष्णा सोबती एक सफल स्वातंत्र्योत्तर महिला रचनाकार है। जिन्होंने अपनी कहानियों में जीवन व्यथा की कथा को अलग ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। कृष्णा सोबती ने अपनी कहानियों में अलग-अलग विषयों का चयन किया है। उनकी हर एक कहानी एक अलग समस्या को अभिव्यक्त करती है। इन्होंने सामाजिक संदर्भों में प्रेम, विवाह, वात्सल्य, ममता आदि जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति की है।

कृष्णा सोबती ने विविध उदाहरणों से विविध समस्याओं को स्पष्ट किया गया है। पारिवारिक संघर्ष को बख़ूबी दिखाया है। नारी कि मानसिकता एवं उनकी स्तिथि को खुले रूप से अभिव्यक्त किया है। उन्होंने अपनी कहानियों में प्रेम के स्वरूप को उजागर किया है। उनकी कहानियों कि नारी इतनी पीड़ा को सहने के बाद भी अनेक कठिनाइयों का डटकर सामना करती है। नारी संबंधी समस्याओं का चित्रण 'दादी अम्मा', 'दो राहें दो बाहें, 'कुछ नहीं कोई नहीं', 'सिक्का बदल गया, 'बहनें, एक दिन', 'गुलाबजल गेंडेरियाँ आदि में दिखाई देता है। उनकी कहानियों में ज्यादातर पारिवारिक समस्या तथा देश विभाजन की समस्या को भी उजागर किया है। आर्थिक समस्या के अंतर्गत उन्होंने आम जनता एवं ग़रीबी से जूझती हुए लोगों की व्यथा को दर्शाया है। जो कि अधिक प्रभावशाली बना है। मोटे तौर पर देखा जाए तो कृष्णा सोबती ने नारी की विविध समस्या को अपनी कहानियों में चित्रित किया है। उनकी ज्यादातर कहानियों में नारी की विविध समस्याएँ दिखाई देती हैं।

कृष्णा सोबती ने अपने कहानी संग्रह में निम्न से लेकर उच्च लोगों की समस्याओं को अपनी कहानियों में उजागर किया है। हर एक मुद्दे को उन्होंने उठाया है। प्रस्तुत कहानी संग्रह में कृष्णा सोबती ने मध्यवर्गीय परिवार की स्तिथि को दर्शाया है और साथ ही विभाजन के दौरान लोगों की मानसिकता किस प्रकार बदली उसपर भी अपने विचार अपनी उनकी सभी कहानियाँ यथार्थ से जुड़ी होने के कारण लोगों को पढ़ने कहानियों में व्यक्त किए हैं। नी कहानि बहुत प्रभावित करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

कृष्णा सोबती, बादलों के घेरे, राजकमल प्रकाशन, 1 बी, नेताजी , नेताजी सुभाष मार्ग, न नई दिल्ली 110002, 19801

डॉ. एन. जयश्री, कृष्णा सोबती की कथा भाषा, विद्या प्रकाशन, 'सी-449, गुजैनी, कानपुर 208 022 दूरभाषा: 0512- 2285003-20131

छबिल कुमार मेहेर, कृष्णा सोबती एक मूल्यांकन, सामयिक बुक्स, 3320-21, जटवाडा, दरयागंज, एन. एस. मार्ग, नई दिल्ली- 110002-20161

सुप्रिया, पी., कृष्णा सोबती की कहानी कला, गोविन्द पचौरी, जवाहर पुस्तकालय, हिन्दी पुस्तक प्रकाशक एवं वितरक सदर बाजार, मथुरा (उ.प्र.)-281001-20081

प्रा. सपना नामदेवराव काळबांडे, कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में विभिन्न समस्याओं का चित्रण, श्रीराम प्रकाशन, G-398, गुजैनी, कानपुर-208 022-20151

डॉ. ब्रिजिट पॉल, कृष्णा सोबती व्यक्ति एवं साहित्य, कुंजबिहारी पचौरी जवाहर पुस्तकालय, मथुरा (उ.प्र.) 281001-20051

तृतीय अध्याय

'बादलों के घेरे' कहानी संग्रह का कहानी के तत्त्वों के आधार पर समीक्षा

'बादलों के घेरे' कहानी संग्रह का कहानी के तत्त्वों के आधार पर समीक्षा

बादलों के घेरे में सोबती की कथा यात्रा को समेटती चौबीस कहानीयाँ है। बादलों के घेरे (कहानी संग्रह) 1980 में प्रकाशित है। इन कहानियों में मध्यवर्गीय परिवारों की समस्या, संवेदनाओं, घुटन और दुख के यथार्थ का वर्णन है और साथ ही भारत पाकिस्तान के विभाजन के दौरान लोगों की मानसिकता किस प्रकार बदली है उन पर यह संग्रह आधारित है।

युग की बदलती परिस्थितियों एवं जीवन बोध के अनुकूल भाषा का स्वरूप परिवर्तित होता है। व्यक्ति की मनोदशाओं एवं यथार्थ की सूक्ष्म संवेदनाओं के लिए सार्थक भाषा की जरूरत है। सोबती ने भारतीय लेखिकाओं से साक्षात्कार में कहा- लेखक होने के नाते भाषा के रचनात्मक केन्द्र में होने के बावजुद उसे ही अपना अतिक्रमण भी करना होता है। अपने को परे सरकाकर पात्रों के अनुरूप भाषा और मुहावरे को ढालना मात्र प्रयोग नहीं लेखक की सामर्थ्य का एहसास भी देता है। किसी रचनाकार में ऐसा कर सकने की सामर्थ्य लेखक और पाठक दोनों के लिए सृजनात्मक संवेदन का विस्तार करती है। लेखकीय आत्मविश्लेषण और आत्मान्वेषण इसी प्रक्रिया में छनकर निपुणता का रूप धारण करता है।""

सोबती ने संप्रेषणीयता हेतु सही भाषा को ढूँढ़ने का प्रयास किया है। उन्होंने अपने अभिनव भाषिक प्रयोगों से कथा भाषा का नया रूप दिया है। सोबती ने युग संवेदना के अनुकूल भाषा की तलाश की।

कृष्ण सोबती की कहानियों में युग संवेदना के अनुकूल कथा भाषा का प्रयोग है।

उन्होंने अपने बादलों के घेरे कहानी संग्रह में इन चौबीस कहानियों की निम्नलिखित विषयों पर बड़ी मार्मिकता के साथ चर्चा की है।

1. देश विभाजन और लोगों की मानसिकता।

2. अकेलेपन के काटने पल, घेरे और दिन।

3. बाल मनोविज्ञान।

4. कोठों की अंदरूनी बातें।

5. दाम्पत्य जीवन की अतृप्तियाँ।

6. स्त्री पुरुषों के विवाहेत्तर संबंध।

7. जमीन से लगाव और देश भक्ति।

बादलों के घेरे

कथानक

बदलों के घेरे: यह कहानी 1990 में प्रकाशित हुई। यह एक ऊपरी तौर पर बेहद रोमानी-सी कहानी है। इस कहानी की नायिका मन्नो है। मन्नो टी. बी (क्षयरोग) की मरीज़ है। मन्नो की चाची रवि की बुआ है। रवि अपनी बुआ के घर में मन्नो से मिलता है। लेकिन परिवार के लोगों के साथ मन्नो को उठने बैठने नहीं देते। मन्नो सब कुछ निःसंग भाव से सहती है। कभी भी अपना दुःख प्रकट नहीं करती है। क्षयरोग के बीमारी के कारण मन्नो बुवाली में एक कॉटेज में रहती है। एक दिन रवि बुवाली में मन्नो से मिलने जाता है। मन्नो ठंडेपन से पेश आती है। बादलों के घेरे के बीच वह चुपचाप झेलती है।

रवि का विवाह मीरा से होता है। लेकिन वह मन्नो को भूल नहीं पाता है। मन्नो मृत्यु तक रवि को याद करती है। अंत में उसके नाम एक पार्सल छोड़ जाती है। उस पार्सल में उसके लिए जर्सी थी। कहानी के अंत में रवि भी क्षयरोग से पीड़ित होता है। घर परिवार और बच्चे होने पर भी वह अकेला होता है। वैसे जैसे कभी मन्नो थी।

चरित्र चित्रण

मुख्य पात्र :- मन्नो जो क्षयरोग होने के कारण हमेशा उदास रहती और रवि से अपने प्रेम का इज़हार नहीं करती।

रवि भी मन ही मन मन्नो से प्रेम करता पर बता नही पाता। मन्नो की बुआ: वह मन्नो से पहले बहुत प्रेम करती थी पर जब उसे पता लगा कि मन्नो को क्षयरोग की बिमारी है तब से उससे उसके बच्चो को दूर दूर रखती है। जो सम्मान वह पहले मन्नो को देती थी अब वह नहीं देती।

गौण पात्र: मीरा(रवि की पत्नि), मीरा के बच्चे, बुआ के बच्चे।

संवाद

बादलों के घेरे कहानी एक ऐसी कहानी है जो सभी के दिल को छू लेती है। इस कहानी में पंजाब का परिवेश देखने को मिलता है। एक बिमारी के कारण किस प्रकार उनको अपना प्रेम छुपाना पड़ता है और कोई भी उनके पास नहीं आता सब दूर हीं रहते हैं। वह उनके संवाद से पता चलता है।

उदाहरण :

"खाना लगेगा, साहिब ?"

"बुआ कब तक लौटेंगी ?"

"खाने को तो मना कर गई हैं।"

कथन के रहस्य को मैं इन अर्थहीन-सी आँखों में पढ़ जाने के प्रयत्न में रहता हूँ।

"और जो मेहमान हैं ?"

नौकर तत्परता से झुककर बोला, "आपके साथ नहीं, साहिब ! वह अलग से ऊपर खाएँगी।"11

उद्देश्य

कृष्णा सोबती जी ने बादलों के घेरे में बिखरी हुई नारी का, संपर्कों के लिए ललकने का चित्रण किया है। इस कहानी में सोबती ने व्यक्ति मन की विवशता को बड़ी ही सुक्ष्मता से व्यक्त किया है। क्षयरोग के कारण मन ही मन हुए मन मुटाव को इस कहानी में दर्शाया है। बिमारी के चलते मन में छिपे प्रेम को अस्विकारा है।

दादी अम्मा

कथानक

दादी अम्मा की कथा: यह कहानी 1954 में हिन्दुस्तान टाईम अंतरराष्ट्रीय में छपी थी। यह कहानी बादलों के घेरे कहानी संग्रह में 1980 में प्रकाशित हुई है।

कृष्णा सोबती ने इस कहानी में वृद्धाव्यस्था के मनोभावों को चित्रित किया है। मेहराँ के तीन बेटे, सुन्दर बहुएँ, दो बेटिया, पोते पोतियाँ और सास ससुर का एक भरा पूरा परिवार है। मेहराँ के सास ससूर परिवार के अन्य सदस्यों से कटे पिछवाड़े के कमरे में रहते हैं। एक समय सास इस घर की मालकिन हुआ करती थी। लेकिन आज वह केवल बच्चों की दादी अम्मा है। उसकी बात को सब अनसुनी करते, उसके दवा दास की खबर कोई नहीं रखता, घर में ब्याह होने पर उससे सलाह-सम्मति करना आवश्यक नहीं समझा जाता, उसके लिये किसी को फुरसत नहीं। उसे अपना अतीत याद आता है। जब वह दुलहिन बनकर आई थी। मेहराँ घर की बहू बनकर आई थी। मेहराँ की गोद भरी थी। बहू मेहराँ के लिये उसने (दादी अम्मा) अपने पति को कमरा खाली करने के लिये कहा था। मेहराँ के सास बनते ही दादी अम्मा का शासन खत्म हो जाता है।

कुछ दिनों के बाद दादी अम्मा बीमार हुई। डॉक्टर ने उन्हें चंद घंटों का मेहमान बताया है। मेहराँ ने पूरे परिवार को बुलावा भेजा। सास के पैरों को छूकर वह रोने लगी, पोतो बहुओं, पोतियों ने आर्शीवाद लिया। दादी अम्मा के पति उनका हाथ पकड़कर रोने लगे। दादी अम्मा की मृत्यु के बाद पति टूट गए। रात को पीपल के पेड़ से लगे सिसकते रहे। मेहराँ अपने तीनों बेटों के साथ और स्नेह से बोली-"बापू अपने इन बेटों की ओर देखो, यह सब अम्मा का ही तो प्रताप है। महीने भर के बाद बड़ी बहू कि झोली, भरेगी, अम्मा का परिवार और फूले-फलेगा। बहू की इस बातों से एहसास हुआ की दादी अम्मा अभी मरी नहीं। उसने अपने देह के कपड़े बदले है। अब वह बहू में जीएगी, फिर बहू की बहू में।

चरित्र चित्रण

मुख्य पात्र दादी अम्मा है। उन्ही से कहानी की शुरुआत होती है। वह अपने पुराने परंपराएँ और रीतिरीवाजों को कायम रखना चाहती है।

मेहराँ: मेहराँ दादी अम्मा की बहु है और उसे दादी अम्मा की पुरानी परंपराए है वह नहीं अपनाने हैं। वह आज के जमाने की औरत होने के कारण मोर्डन बनना पसंद करती है।

गौण पात्र: बहू - बेटा, दादा, बच्चें, बड़ी फूफी, पोता-पोतियाँ आदि।

सांवाद

दादी अम्मा कहानी में पंजाब के मध्यवर्गीय परिवार की समस्या को दिखाया है। पुरानी और नई परम्पराओं के चलते सास और बहू के बिच अनबन होती रहती है। " मेहरों को माँ का घर याद हो आया। पास-पड़ोस की स्त्रियों के बीच माँ भाभी का हाथ आगे कर कह रही है, "बाबा, यह बताओ, मेरी बहू के भाग्य में कितने फल हैं ?"पास खड़ी मेहराँ समझ नहीं पाई। हाथ में फल ? "माँ, हाथ में फल कब होते हैं ? फल किसे कहती हो माँ ? "माँ लड़की की बात सुनकर पहले हँसी, फिर गुस्सा होकर बोली, "दूर हो मेहरों, जा, बच्चों के संग खेल !"32 इस कहानी में विवारणात्मक शैली प्रधान है।

उद्देश्य

कृष्णा सोबती ने इस कहानी में वृद्ध व्यक्ति की पारिवारिक स्थिति का विभिन्न कोणों से खोजा है। इसमें संयुक्त परिवारिक में सामान्य बहू सास संबंध को स्वभाविक रूप में व्यक्त किया है। सारी जिन्दगी पूरे परिवार को व्यवस्थित करके दादा और दादी अकेले अपने अतीत की यादों में खोये रहते हैं। नई पीढ़ी का उनके प्रति उपेक्षा पूर्ण व्यवहार जरा भी आश्चर्य जनक नहीं लगता है।

भोले बदशाह

कथानक

भोले बादशाह: भोले बादशाह मानसिक रूप से विक्षिप्त (पागल) युवक की कहानी है। वह गली मुहल्ले के हर व्यक्ति से जगड़ता है। नाई लाला, नत्थू ,हलवाई सब उसकी खिचाई करने में चूकते नहीं। सबसे अपनी ब्याह कि बात करता है। यह थोड़ी देर बाद घर पहुँचता है। फिर वह अपनी भाभी से लड़ने लगता है। वह उसे स्नेहपूर्वक खाना परोसती है। यहा से भी लड़कर चला जाता है। रात तक न आने से माँ बड़े बेटे से खोज करने को कहती है। बेटा माँ की बात को अनसुनी करता है।

सवेरे तेज बुखार से भोले बादशाह घर आता है। बड़े बेटे से कहने पर भी वह दवा का इंतजाम नहीं करता है। अपने जवान बेटे को निस्सहाय देख वह सोचने लगी कि मेरा बेटा ठीक-ठाक होता तो आज उसका भरा-पूरा परिवार होता है। अगले दिन उसकी सास गले में अटकने लगी। उसने अपनी माँ को दुलहन समझ बाँहों में भर लिया। धीरे-धीरे हाथ की पकड़ ढीली हुई। उसने दम तोड़ दिया।

चरित्र चित्रण

मुख्य पात्रा: भोले बादशाह जो पागल है और उसे सिर्फ शादी करनी है। मानसिक रूप से पागल होने पर उसकी माँ को ही उसकी पूरी ज़िम्मेदारी उठानी पडती है। अम्मा: भोले बादशाह की माँ। जो हर वक़्त उसका ख्याल रखती है।

गौण पात्र : भोले बादशाह के बड़े भाई और उसकी पत्नी जो बादशाह को अपने से दूर ही रखती थी।

पड़ोसी, हरबंसे, लाला नाई, नुत्थू हलवाई, गांव के लोग आदि।

सांवाद

इस कहानी के सांवाद कुछ इस प्रकार है, ""मौसी, रात-भर कहीं सरदी खा गया है। सोंठ-मुनक्के का पानी पिलाओ इसे।" फिर थपकी देकर भोले से हँसकर बोला, "अच्छा भोले

यार, सुबह तक उठ जाना। कल तो तुम्हारी बारात चढ़नी है।"भोले ने बेसुधी में ही जैसे सुना और समझ लिया। झपटकर हरबंसे का हाथ खींचा और फटे गले से कहा, "तू ही चलेगा मेरे साथ ! न गया तो हड्डी-पसली का चूरमा..."52

उद्देश्य

इस कहानी में माँ की पीड़ा का चित्रण है। बड़े बेटे और पड़ोसियों की क्रूरता के कारण अपनी लाचारी पर रोने के अतिरिक्त कुछ नहीं कर पाता है। बेटे को अपने बाँहों में दम तोड़ता देख उसका मातृत्व छटपटा उठता है। मानसिक रूप से विक्षिप्त होने के कारण भोले बादशाह का न घर में बावजूद रहता है, न समाज में।

बहनें

कथानक

बहने यह परिवार से जुड़ी कहानी है। यह तीन बहनों की कहानी है। इस कहानी में मंझली और छोटी बड़ी बहन के घर आती है। बड़ी बहन के बेटे धर्म की शादी है। तीनों बहने कई वर्षों के बाद मिलती है। "आवेग में ओढ़नियाँ खिसकी, बाँहे बाँहों से मिली और तीनों बहने गले लग गई बड़ी छोटी और मंझली। बड़ी की चाल में अधिकार और दूल्हे की माँ होने की उमंग है। मंझली ने कोई सुख नहीं देखा है। भाग्य ने मंझली का साथ नहीं दिया है। वह विधावा और निःसंतान है। बडी़ की सास मंझली से उसके देवर के बेटे को गोद लेने की बात कहती है। बड़ी आकर सास को ऐसी वैसी बात न करने का हुक्म देती है। धर्म से मिलने पर मंझली और छोटी की छिपी मातृता छलक उठती है। मंझली अपने बीते याद में खो जाती है। अगले दिन दोनों ने बड़ी से रोते-रोते विदा लिया।

चरित्र चित्रण

बहने इस कहानी में पत्रों के नाम नहीं है सिर्फ बड़ी बहन, छोटी बहन और मंझली बहन है। और संपूर्ण कहानी मंझली के इर्दगिर्द घूमती है। मंझली को संतान न होने के कारण उसे बहुत दुख होता है। बड़ी बहन की सास मंझली को ताने देने में आगे है।

गौण पात्र : मौसी, बहू, गाँव के लोग आदि।

संवाद

कहानी के संवाद कुछ इस प्रकार है - "छोटी की बात सुनकर मँझली हँसी। छोटी मौसी को कितना पहचानती है ! बहू की विधवा निःसन्तान बहन के परिवार के झगड़ों से निकालकर बुढ़िया को किसी दूसरी ओर ले जाना आसान नहीं। समधियों की बात सुनते ही मौसी सीधी होकर बैठ गई और उत्साह से बोली, "बेटी, धर्म के लिए कोई एक रिश्ता था ! लोगों ने चक्कर काट-काटकर हमारी देहरी धुला डाली, पर तुम जानो, हमें कोई लेन-देन का विचार न था। मालिक की दया से दिया घर में सबकुछ है।"58

उद्देश्य

इस कहानी में सोबती ने चित्रण किया है कि नि:सन्तान विधवा नारी किस प्रकार समाज के तीनों का शिकार होती है। संतान न होने पर अकेलेपन का कारण बन जाता है।

बदली बरस गई

कथानक

बदली बरस गई: कहानी में कल्याणी की माँ ने पति की मृत्यु के बाद ससुराल वालों के अत्याचारों में तंग आकर आश्रम में शरण ली। अर्थात मंत्रवत जिंदगी से ऊबकर आश्रम में आयी। कल्याणी का बचपन का जीवन आश्रम में ही बीता है। कल्याणी आश्रम के भोजन गृह में काम करती और फूल चुनती है। परन्तु उसका मन नहीं लगता है। उसकी माँ विधवा होने के बाद माया मोह को छोड़कर आश्रमवासिन बनी। भक्त आश्रम में साध्वी माँ और महाराज के आशिर्वाद के लिये आते हैं। लेकिन कल्याणी को दादी अम्मा ,चाचा ,चाची , बुआ की याद आती है। लेकिन माँ उसे भजन और उपवास कर मन पर काबू रखने का सुझाव देती है। अपनी बेटी की उभरती युवा देह देखकर भी माँ को कुछ याद नहीं आता है। एक दिन कल्याणी ने धैर्य से महाराज और माँ के सामने आश्रम छोड़कर अपना घर बसाने की बात कहती है। माँ को छोड़कर कल्याणी चली गई। महाराज ने साध्वी माँ को आश्वासन देते हुए कहा- 'भरी बदली

थी, बरस गई। साध्वी माँ सोचने लगती है कि इन लंबे वर्षों में क्या उसके मन पर भी ऐसी काली बदली गिरती चली आ रही थी जो आज बरस गई है, बरस गई है।

चरित्र चित्रण

मुख्य पात्र: कल्याणी - जो अब बड़ी हो गई है और वह अपने असगे के जीवन के बारे में सोचती है। कल्याणी की माँ - जो विधवा है और वह अपनी बेटी के साथ एक आश्रम में साध्वी बनकर रहती है। महाराज - जिन्होंने उन दोनों को पनाह दी है अपने आश्रम में।

गौण पात्र: गौरी माँ, आश्रमनिवासी, सखी-सहेलियां कल्याणी की दादी जो उसकी माँ को मरती रहती थी आदि।

संवाद

इस कहानी के संवाद बहुत ही दुख भरे रहे हैं। "और फिर माँ के आँसुओं के साथ-साथ उसकी पिटाई भी होती थी।

"माँ, नीचे क्यों लेटी हो..."

माँ का जी उछला।

"माँ, तुम्हारे बाल क्या हुए, कट क्यों गए माँ..."

माँ ने आँचल आँखों पर थमा दिया।

"माँ, बोलो तो..."

माँ कुछ बोली नहीं।"66

उद्देश्य

(कृष्णा सोबती जी ने इस कहानी में कल्याणी के माध्यम से आधुनिक नारी का चित्रण किया है। लड़की सयानी होते ही ईश्वर को और माँ की आधि- भौतिकता की सत्ता को अस्वीकार करके अपना घर बसाने की इच्छा से आश्रम छोड़ती है। सोबती ने इसमें स्त्री के तन-मन के विकास को सूक्ष्म ढंग से वर्णन किया है।

गुलाबजल गंडेरियाँ

कथानक

गुलाबजल गंडेरियाँ का अर्थ है कि मीठी-मीठी और ठंडी-ठंडी मलाई कुल्फी नारी की प्यास को बुझाती है।

इस कहानी की नायिका धन्नो तपी दुपहर में प्यास और ठंडक की तड़प के लिये कटरे की नाली के पास पड़ी है। उसका शरीर अब केवल हड्डी मात्र है। धन्नो का पति बाजार में बरफ़ बेचा करता है। पति की मृत्यु के बाद वह बाजार के कई मर्दो को ठंडक पहुँचाती है। "वे एक-से दिन-रात और अलग-अलग कोठरियाँ, छोटे-बड़े लाला और मुनीम पर यह घुटती-सी दुपहरी और गर्मी में अटका हुआ दिन।"6

वह बादलों के बरसने का इंतजार करती है। कोठरी में पड़ी पतली ढीली चारपाई, टूटे मुहँ दर्द को व्यक्त कराते हैं। तभी उसने गंडेरी गुलाब कुल्फ़ी मलाई की, मलाई वाली कुल्फी की पुकार सुनी। उसे अपने संपन्नता के दिन याद आते है। बेजान-सी जमीन पर लेटी। उसे अपने बाबूराम की याद आती है। उसकी आँखें बंद होने लगती है। यह देखती है कि वह चार आदमियों के कंधों पर है। उसकी आँखों पर एक पर्दा आ गिरता है। अचानक वर्षा हुई धन्नो बरसते पानी की बौछार देखती और आँखे बूंद लेती है। उसकी आँखों की प्यास बुझ गई पर उसके कंठ की प्यास कभी न बुझी।

चरित्र चित्रण

मुख्य पात्र: धन्नो वेश्या है। उसी पर यह कहानी आधारित है।

गौण पात्र: बुढ़िया, बाबूराम, चून्नी, मलाई वाला, गांव के लोग आदि।

संवाद

कहानी का संवाद कुछ इस प्रकार के हैं - "सबकुछ यहाँ बिकता था और उसने आज तक नहीं खाई ? क्यों... क्यों... यह सब खाएगी।"77

उदेश्य

सोबती जी ने इस कहानी में वेश्या धर्मा की विवशता का वर्णन किया है। भयंकर गरीबी और जीवन जीने की गंभीर स्थितियाँ मनुष्य को किचड़ में फेंक देती हैं।

कुछ नहीं कोई नहीं

कथानक

यह कहानी दो गृहस्थियों में बँटी प्रेम की कहानी है। इस कहानी की नायिका शिवा है। शिवा प्रेम के खातिर अपने पति और परिवार को नष्ट करती है। पति के मित्र आंनद के साथ दस साल बिताती है। आनंद की मृत्यु के बाद वह अपने पूर्व पति को खत लिखती है। प्रेम के लिये वह सब कुछ नष्ट कर देती है। उसे न प्रेम मिला न जिंदगी मिली। आंनद की पूर्व पत्नी के बच्चों के बीच उसे लगता है वह वहाँ मेहमान है।

वह एकदम बेसहारा होती है। ताऊ के आदेशानुसार घर किराए पर उठाने और सामान बेचने की बात जब आंनद का बेटा विनय संबोधन हीन वाणी में करता है। तब उसके भीतर एक छट-पटाहट होती है। दस साल तक आंनद के साथ रहकर मुक्त नहीं होती और आजीवन अतीत और वर्तमान के द्वंद्व में जीती है। रूप ही उसके जीवन की गहरी स्मृति है। अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए वह कहती है-"अंधियारे में कुछ हाथ नहीं लगा। पराए प्यार का झूठा अधिकार तक नहीं। कोई दावा नहीं।"7

चरित्र चित्रण

मुख्य पात्र: शिवा इस कहानी की नायिका है। आनंद शिवा का प्रेमी था। रूप शिवा का पति था जिससे वह अलग हो गयी थी।

गौण पात्र: मीनू और विनय आनंद के पूर्व पत्नी के बच्चें थे। ताऊजी, भैया, डॉक्टर, दर्जी आदि।

संवाद

कहानी के संवाद कुछ इस प्रकार के है-

"आनन्द जैसे सुनकर उलझ गए हों, पर हँसने का प्रयत्न करते हुए कहा, "शिवा, क्या यहाँ अच्छा नहीं लगता ?

"नहीं आनन्द, कब तक पड़े रहेंगे होटल में...।"

आनन्द एकाएक कोई शब्द नहीं ढूँढ़ पाए। कुछ खीझ के-से स्वर में बोले, "इतनी अच्छी जगह में भी उकता गई ?"87

उदेश्य

पति-पत्नी का एक दूसरे को प्रेम करना, एक दूसरे के लिए प्रतिबल रहना, त्याग करना आदि बातें आज थोथी भावुकता रह गई है। अतीत की स्मृति वर्तमान को आच्छन्न किये रहती है। इससे तनाव और कुंठा पैदा होती है। शिवा के साथ ऐसा ही होता है। वह न वर्तमान के यथार्थ को स्वीकार करती है और न ही उससे अतीत की स्मृति छोड़ती है। उसके भीतर निरंतर द्वंद्व चलता है।

टीलो ही टीलो

कथानक

टीलो ही टीलो: इस कहानी में बच्चों का चित्रण है। दो टीमों में बंटे बच्चें टीलो खेलते हैं। बब्बू, पप्पी, रज्जों, सक्कू, दम्मों, रज्जू, जत्ती, मीनू, बंसी, रंजी, कालू, सभी बच्चें एक

दूसरे को चिढ़ाते हुए खेल रहे हैं। टीलों का ढूँढ़ते हुए बच्चें जंगल में घूमते हैं। बब्बू की टीम के बच्चें निराश हो हार मानते हैं। तब दूर नीचे खड्डे में से पप्पी पर से बढ़ती नजर आती है और अचानक वह खड्डे में गिर पड़ती है। बंसी, सराय के दाहिने जाती पतली पंगडंडी से नीचे उतरा। पप्पी की खोज करते हैं। पप्पी उसे कहीं न मिली। सभी निराश हो घर लौटते हैं। जत्ती ने पप्पी की माँ को रोते हुए यह खबर सुनाई। सफेद कपड़े में पप्पी को ढांककर दो सिपाही ले गए। पप्पी के सभी साथी उससे बिछड़ने के दुख में निराश होते हैं। जत्ती ने स्वप्न में देखा कि पप्पी रज्जों को जिताने की बात करती है। सबेरे उठने पर पप्पी की माँ ने जत्ती को पास बुलाया। पप्पी के बारे में पूछा। जत्ती सिसकास स्वप्न की बात बताने लगा। पप्पी की माँ जत्ती की आँखों में पप्पी को ढूँढती है।

चरित्र चित्रण

मुख्य पात्र: बब्बू, पप्पी, रज्जों, सक्कू, दम्मों, रज्जू, जत्ती, मीनू, बंसी, रंजी, कालू, यह सभी मुख्य पात्र हैं।

गौण पात्र: पप्पी की माँ, पापा, आदि।

संवाद

इस कहानी के संवाद कुछ इस प्रकार हैं - "चेहरे पर घबराहट थी, डर था।

"किसी से मारपीट हुई क्या ?"

"नहीं..."

मौसी फिर हँसी... "टीलो में हारे हो न !"

"नहीं..."

इनकार के इस करुण स्वर से मौसी जैसे भयभीत हो गई, "पप्पी तो नहीं लड़ा किसी से...?"

अटक-अटककर कुछ कहना चाहते हुए भौ जत्ती ने केवल सिर हिला दिया, "नहीं !"100

उद्देश्य

सोबती ने इस कहानी में विभिन्न उम्र के विभिन्न स्तर के और विभिन्न मानसिकता के बालकों का चित्रण किया है। बच्चों की मानसिकता के साथ पुत्री के शोक में माँ की अन्तर्वेदना को चित्रण किया है।

अभी उसी दिन ही तो

कथानक

अभी उसी दिन ही तो: यह कहानी संकुती नामक वृद्ध महिला की कहानी है। संकुती नए वर्ष के पहले दिन घर पर अकेली है। उसके बहू-बेटे, पोता-पोती सब नए वर्ष का जश्न मनाने घर से बाहर गए हैं। अपने घर में वह अधिकार पूर्ण गर्व से बच्चों की देखभाल करती थी। पति की मीठी और अपनेपन में घुली दृष्टि, पति की उत्सुकता से प्रतीक्षा करती। पति की मृत्यु के बाद उसकी अपनी सत्ता सदा के लिये मिट जाती है। उसके बाद से वह घर का कर्तव्य निभा रही है। अब वह अपने सास की तरह वृद्ध है।

कुछ देर बाद बच्चे लौटकर घर आते है। संकुती से बिना मिले अपने-अपने कमरों में चले जाते हैं। वह निराश होती है। आधी (देर) रात को उसका बड़ा बेटा आकर आलिंगन करता है। तब उसकी मोह ममता छलछला कर काँपते स्वर में बोली- "सुखी रहो।" उसके पलकों के बाहर के आँसुओं के बिंदु बह गये।

चरित्र चित्रण

मुख्य पात्र: सुकन्ति इस कहानी की नायिका हैं।

गौण पात्र: बहु, बेटे, पोता-पोती जो नया साल मनाने घर से बाहर गए हैं सुकन्ति को अकेला छोड़कर।

संवाद

"मोह-ममता छलछलाकर काँपते स्वर में बोली, "सुखी रहो..." बेटे ने आवेश में एक बार माँ का आलिंगन किया और आँखों में विवशता भरकर दबे पाँव बाहर हो गया।"106

उद्देश्य

कृष्णा सोबती ने संकुती के माध्यम से वृद्ध पीढ़ी के अस्तित्व, परिस्थितियों आगे स्वयं को सौंप देने की विवशता, व्याकुलता की पूर्ण अभिव्यक्ति की है।

दोहरी साँझ

कथानक

दोहरी साँझ यह जया महेन्द्र के बेटे अविनाश की कहानी है। अविनाश की माँ जया है। अविनाश छाया से प्रेम करता है। कई वर्षों के बाद जया को महेन्द्र की याद आती है। जब वह आखिरी बार मिली थी। जया अविनाश के साथ छाया से मिलने जाती है। छाया के पिता को देखकर वह ठिठक जाती है। संयोगवश छाया महेन्द्र की बेटी होती है। उसने अपने बेटे अविनाश को छाया से विवाह की अनुमति दी थी यही वह दोहरी साँझ है।

चरित्र चित्रण

मुख्य पात्र: अविनाश, उसकी माँ जया और पिता महेंद्र और छाया जो अविनाश की प्रेमिका हैं।

संवाद

पंजाबी परिवेश होने के कारण भाषा में भी पंजाबी देखने को मिलती हैं।

"जो तुम्हें मानना नहीं था, वह में कैसे कह पाया माँ-यह सोचता हूँ, पर छाया के लिए तुम कड़ी बनी रहीं, यह कैसे हो सका, यह क्यों हो सका..?"111

उदेश्य

कृष्णा सोबती ने इस कहानी में प्रेम की नयी ताकत की ओर संकेत किया है। प्रेमी के दर्शन से जया में एक नयीं स्फूर्ति पैदा होती है।

डरो मत, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा

कथानक

डरो मत, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा यह भारत पाकिस्तान पर लिखी गई कहानी है। आग की लपटें है, जगह-जगह दंगाइयों की भीड़ का शोर है। "मारो-मारो, काटो, अल्लाह हो अकबर, हर-हर महादेव" के नारो से सारा वातावरण गूँजता है। इन सबके बीच दो हाथ-रक्षा के लिये आगे बढ़ते हैं। वे किसी सुन्दर सुकुमार शरीर को थामकर आश्वासन देते हैं- "डरो मत मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा।"10 क्षण भर में नारों की आवाजें करीब आई। सिर दीवार से पटका और उस शरीर की बाँहे काट दी। रक्षा का वायदा टूटता है। वह निर्जीव युवक अपने वतन के कैम्पर पहुँचता है। ड्राइवर ने हमदर्दी से उस बेजान शरीर को झकझोरा और कहा- "डरा मत मैं, तुम्हारी रक्षा करूँगा.... आवाज मौत की खामोशी में खो गई। ड्राइवर ने सर्द हाथों से उठाकर बुझे हुए शरीर को जमीन पर लिटा दिया। मिट्टी से मिल गई। लेकिन सुनो, मिट्टी से एक धीमी सी आवाज उठ रही है। डरो मत. मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा। मैं.....।"

चरित्र चित्रण

मुख्य पात्र: सुकुमार इस कहानी का नायक है।

गौण पात्र: बुढ़े लोग, ड्राइवर, बच्चें आदि।

संवाद

कहानी में मुस्लिम परिवेश होने के कारण भाषा में भी उसकी छाया दिखाई देती है।

जैसे - "उस बन्द मकान में, साँस रोके हुए दो प्राणी डोलते-डालते, डूबते-डूबते, जिन्दगी और मौत की कशमकश में।"115

उदेश्य

सोबती ने इस कहानी में विभाजन के समय के खूनी माहौल का और दुश्मन की मनोवृत्तियों का मार्मिक चित्रण किया है।

जिगरा की बात

कथानक

जिगरा की बात : इस कहानी की नायिका अमरो है। अमरो एक वृद्ध महिला है। कच्ची उम्र में ही उसके पति का स्वर्गवास हुआ था। सरदार के अतिरिक्त अमरो के चार लड़के और एक लड़की थी। सब स्वर्ग सिधर गए थे। इकलौते बेटे को उसने लाड प्यार से पाला-पोसा है। वह (सरदार) गलत काम धंधे करता है। यह जानते हुए भी माँ उसके कामों पर परदा डालती है। सिपाही करीम बख्श जब सरदार को ढूँढते हुए घर आता है। तब अमरों उस पर बरस पड़ती है। सरदार के खाना खाते समय सिपाही और थानेदार आकर उसे गिरफ्तार करते है। माँ (अमरो) थानेदार को खरी-खोटी सुनाती है। बेटे को शेर बनाकर जाने को कहती है। माँ की आँखों उसे हौसला देती है। अगले दिन बेटे के कपड़े धोकर उसके इंतजार में बैठती है।

चरित्र चित्रण

मुख्य पात्र: अमरो इस कहानी की मुख्य पात्र है।

गौण पात्र: सन्तरी, बेबी, सरदार, थानेदार, सिपाही करीमबक्श आदि।

संवाद

पंजाबी परिवेश लाने के लिए पंजाबी भाषा का प्रयोग किया है।

"अमरो ने डग लम्बे किए। वह क्या किसी का मुँह पाकड़ेगी? दुनिया को किसी की बढ़ौती नहीं सुहाती।"118

"अमरो ने फिर शुरू किया, "बच्चा, आज तुम्हें कोई... पूछता आया था।"

"कौन?" सरदारे का स्वर सदा की तरह रोबीला था।

अमरो झिझकी, पर कब तक झिझकेगी! उपलों की राख को लकड़ी से कुरेदती-कुरेदती अस्फुट-से स्वर में बोली, "गर्कजाना सिपाही पूछ रहा था !"

"माँ..."122

उदेश्य

सोबती ने इस कहानी में माँ की मानसिकता का सहज और स्वभाविक चित्रण किया। वह बेटे को बचाने के लिये पूरे समाज से विद्रोह करती है।

खम्माघणी अन्नदाता

कथानक

खम्माघणी अन्नदाता यह कहानी राजसत्ता में बदल जाने पर महाराज के मन होने वाले तनाव से संबंधित है। महाराज के मन में अन्तर्द्वन्द्व चलता है। वह अपने हाथों से राज्य, सत्ता का अधिकार छिन जाने पर दुखी है। राजसत्ता, जनसत्ता में बदल रही है। उन्हें लगता है कि उनके शासन के पिछले तीस वर्ष किसी अर्थहीन जड़ता की तरह विलीन होता है। रात को ड्योढ़ी पर प्रहारी की "खम्माघणी अन्नदाता।" 12 पुकार सुनने पर उसे लगता है कि यह उपहास है या व्यंग्य है। स्वप्न में भूखी, नंगी जनता को अपनी ओर आक्रोश में बढ़ता देख वह हड़बड़ाता है। फिर गहरी वेदना में सेचता है कि मैंने अपने स्वार्थ के लिये कुएँ खुदवाए, नृत्य सभा का आयोजन किया। परन्तु कभी भी जनता की भूख मिटाने, उन्हें देखने समझने का प्रयास नहीं किया। अगली सुबह जन समारोह में न चाहते हुए भी उन्हें सत्ता जनता के हाथ में सौंपना पड़ता है। जनता खुशी से पागल होती है। महाराज निराश हो वापस लौटते हैं। उनके कानों में- "खम्माघणी अन्नदाता ! खम्माघणी.. खममाघणी अन्नदाता। 13 स्वर गूँजते हैं। प्रजा में एकता तथा, अधिकार चेतना का विकास होता है। राजा प्रजा संबंध ॥ में तनाव आता है। राजा अपने स्वार्थों में प्रजा को भूलता है। जनता को मोह भंग की स्थिति से गुजरता है।

चरित्र चित्रण

मुख्य पात्र: महाराज जो राज्य के राजा है। पर बहुत स्वार्थी है।

गौण पात्र: मंत्री, महारानी, प्रजापति, राज्य के लोग आदि।

संवाद

यह कहानी राजनीति के ऊपर है। इस कहानी के संवाद कुछ इस प्रकार के हैं - "महाराज के मन में जैसे कोई पुकारकर कहता है- 'अब क्यों घबरा रहे हो ? अब क्यों काँप रहे हो ? अब देखें तुम्हारी वीरता। बस, इतने से ही डर गए ? अरे महाराज, तलवार देखो, तलवार की धार देखो। यों बड़ी-बड़ी डींग हाँकनेवाले तो हजारों होंगे दुनिया में। पर केवल बातें बनाने से क्या होता है ?"128

उदेश्य

इस कहानी में कृष्णा सोबती ने राजा के मानसिक द्वन्द्व का चित्रण किया है। किस प्रकार एक राजा अपने बारे में ही सोचता है। उन्हें अपने राज्य की कोई चिंता नहीं है।

सिक्का बदल गया

कथानक

सिक्का बदल गया यह कहानी 'प्रतीक' पत्रिका में 1948 में प्रकाशित हुई थी। मीलो फैली खेत शाहनी के अपने हैं। इस जमीन में साल में तीन फसल उगती है। लंबे समय में शाहनी का इस चुनाव से गहरा संबंध है। इसी के किनारे कभी वह दुल्हन बनकर उतरी थी और पिछले पचास वर्षों से इसी में नहाती आ रही है। इसके आस-पास में मीलों फैले खेत, दूर-दूर तक फैली हुई जमीने, कुर्दे और बड़ी सी हवेली सब शाहजी के हैं। अब वे सब शाहनी के है। बंटवारे ने स्थितियों को बदल दिया है। शेरा को उसने पाल-पोस कर बड़ा किया है। वही (शेरा) उसकी हवेली की अंधेरी कोठरी में सोने-चांदी की संदूकचिया लूट लैना चाहते है। हिन्दु परीवारों को सीमा की दूसरी ओर ले जाने के लिए ट्रक आ गई हैं। थानेदार दाऊद खाँ बेगू पटवारी और शेर चाहते हैं कि शाहनी जल्दी हवेली से बाहर निकले। शाहनी के भीतर गहरी वेदना है। वह तय करती है कि वह रो-रोकर नहीं, शान से निकलेगी इस पुरखों के घर से, मान से लांघेगी, यह दोहरी, इस पर एक दिन वह रानी बनकर आ खड़ी हुई थी। सभी गाववाले शाहनी को भीगी

आँखों से विदा करते हैं। वे लोग शाहनी से दिल छोटा न करने के लिये कहते हैं। सब निस्सहाय हैं क्योंकि राजपलट गया है। "सिक्का बदल गया है। वह रात में कैम्प की जमीन पर पड़ी सोचने लगती है- "राज पलट गया है. सिक्का क्या बदलेगा? वह तो मैं वहीं छोड़ आई... 15

शाहनी के लिये बंटवारे के कारण हुकुमत के बदल जाने का, सिक्का बदल जाने का, कोई अर्थ नहीं होता है। उसे मानवीय मूल्यों के सिक्के के बदल जाने, संबंधों को निरर्थक बना देने का दुख है।

चरित्र चित्रण

मुख्य पात्र: शाहनी इस कहानी की मुख्य पात्र है। शेरा जिसका सीधा संबंध शाहनी से है।

गौण पात्र: दावत खा, हुसैना, जैना, इस्माइल, जेलदार, गांव के लोग आदि।

संवाद

एक सफल कहानी में संवाद का उद्देश या भूमिका अंतरद्वन्द एवं संघर्ष की सृष्टी करना होता है। सिक्का बदल गया कहानी श्रेष्ठ कहानी है। कहानी का परिवेश पंजाब का परिवेश है। इसीलिए पत्रों की भाषा में पंजाबी देखने को मिलती है।

उदाहरण: "शेरा शाहनी का स्वर पहचानता है। वह न पहचानेगा ! अपनी माँ जैना के मरने के बाद वह शाहनी के पास ही पलकर बड़ा हुआ। उसने पास पड़ा गँड़ासा 'शटाले' के ढेर के नीचे सरका दिया। हाथ में हुक्का पकड़कर बोला, "ऐ हुसैना, हुसैना...।" शाहनी की आवाज़ उसे कैसे हिला गई है ! अभी तो वह सोच रहा था कि उस शाहनी की ऊँची हवेली की अँधेरी कोठरी में पड़ी सोने-चाँदी की सन्दूकचियाँ उठाकर कि तभी 'शेरे, शेरे...'। शेरा गुस्से से भर उठा। किस पर निकाले अपना क्रोध ? शाहनी पर! चीखकर बोला, "ऐ मर गई क्या ... रब्ब तुम्हें मौत दे..."135

उदेश्य

यह कहानी भारत-पाकिस्तान त्रासदी की पीड़ित एवं सांप्रदायिक दंगों की व्यवस्था से उत्पन्न बदबू तथा घटते मानवीय मूल्यों को घेरती है।

सिक्का बदल गया है यह प्रतीकात्मक अर्थ में ध्वनित है। सिक्का - प्रेम, भाईचारे, मूल्य, संबंधों, विश्वास आदि का प्रतिक है।

इस प्रकार का सहज मार्मिक चित्रण भारतीय भाषाओं के साहित्य में नहीं उभरता है।

आजादी शम्मोजान की

कथानक

आजादी शम्मोजान की यह कहानी 1980 में प्रकाशित हुई। यह एक भावुक एंव सवेदनशील कहानी है। देश में आजादी का जश्न मनाया जा रहा है। जनता उल्लास में नाचने लगी, घर, बाजार सजने लगे। शम्मोजान अपने कोठे पर सब खोकर जीवन को देख रही है। बाजार की साज सजावट को वह देखती है। आर्थिक स्थिति बुरी होने पर भी वह भूरे से कोठे पर रोशनी करने को कहती है। मुन्नीजान से आजादी के दिन शहर भर के जश्न की बात करने पर वह क्रोध से कहती है- "क्या कहा, आजादी ? लोगो को आज मिल रही है आजादी ! आजादी तो हमारे पास है। हम-सा आजाद कौन होगा शम्मोजान ?" 16 शम्मोजान सोचती है कि उनकी आजादी कितनी विकृति और कुरूप है। थोड़ी देर में कोठे पर ग्राहकर आते हैं और शम्मोजान अपनी पुरानी आजादी उनके साथ बाँटती है। देश स्वतंत्र हुआ है। हिन्दुस्तानी मानव का मन उमंग से उमड़ता है। लेकिन सोबती ने उत्साह के इस वातावरण में मनुष्य के टुटने, बिखरने की जानी पहचानी स्थितियों को नवीनतम एहसास में व्यक्त किया है।

चरित्र चित्रण

मुख्य पात्र: संपूर्ण कहानी शम्मोजान के ऊपर आधारित है।

गौण पात्र: मुन्नीजान, लिलो, चंपा, बन्नो, कोठे पर आने वाले लोग आदि।

संवाद

इस कहानी के संवादों में इतना दर्द छिपा दिखाई देता है जैसे- "शम्मोजान ने कहा, "आज आज़ादी का "दिन नहीं, रात कहो, रात!" - मुन्नी ने ऐसे चीखकर कहा, मानो कहीं पड़ी हुई

दरारों से फूटकर उसकी आवाज़ बाहर निक्ल आना चाहती हो। और वह अपने पपड़ी-जमें होंठों को फैलाकर हँस पड़ी। "142

उदेश्य

सोबती ने शम्मोजान के प्रति गहरी मानवीय संवेदना को जगाया है। किस प्रकार देश आजाद हुआ पर आजादी अब भी उतनी नहीं मिली।

कामदार भीखमलाल

कथानक

कामदार भीखलाल : यह कहानी एक वृद्ध व्यक्ति की है। उस व्यक्ति का नाम कामदार भीखमलाल है। वह राजदरबार में काम करता है। वह गुप्त-से-गुप्त बातों को जान लेने में बहुत तेज है। 'उनकी जूती की एड़िया घिसी हुई थी लेकिन चाल में दम थी। उनकी कमर कुछ झुकने लगी थी, लेकिन उन्हें इसका नहीं बल्कि चलते-चलते दाएँ-बाएँ और आगे देखने के अलावा पीछे न देख सकने का गम था।" वह अपने पड़ोसी की, नई डॉक्टरनी की, कोतवाल की सब खबर रखता है। कौन किसके साथ गलत संबंध रखता है? किस बहू के रंग-ढंग अच्छे नहीं है? कौन लड़का किस लड़की को भगाने की सोच रहा है? राजदरबार की हर हलचल, शहर में बनते-बिगड़ते रिश्ते, नए झगडे मित्रताएँ इन सबकी खबर रखता है। वह गंधी की लड़की और हेडमास्टर के मंझले लड़के के बीच के संबंध को जानता है। कामदार ने दोनों घरों में यह सूचित करता है। वह अच्छा नागरिक होने के नाते इस काम को अपनी जिम्मेदारी समझता है। इसको वह जिन्दगीभर निभाता है। उनकी समझ-बूझ और अनुभव हमेशा उसका साथ देती है। वह रात को स्वप्न में हेडमास्टर के लड़के को देखता है। वह हेडमास्टर के लड़के के साथ गंधी की लड़की न देखकर, उसकी अपनी भौजाई को देखकर घबरा जाता है। वह चाँदी वाली सेठ की बहू को स्वप्न में देखता है। कामदार यह सब देखकर चीखता है जैसे वह अपने किए पर शर्मिन्दा है।

चरित्र चित्रण

मुख्य पात्र: भीकमलाल कहानी का मुख्य पात्र है।

गौण पात्र: छोटी बाईजी, धवलीबाई, डॉक्टरनी आदि।

संवाद

कहानी के संवाद कुछ इस प्रकार के है - "कामदार भीखमलाल महलों में से गुप्त-से-गुप्त बातों की टोह ले लिया करते थे। दरबार रात को महल के किस हिस्से में थे,"[145]"

उदेश्य

कृष्णा सोबती ने इस कहानी में दूसरों के वैयक्तिक जीवन के रहस्यों को जानना अपना कर्तव्य समझने वाले व्यक्ति का चित्रण किया है। वह व्यक्ति समाज में बनते बिगड़ते, अनैतिक संबंधों को तोड़कर एक स्वच्छ और स्वस्थ समाज के निर्माण के प्रयत्न में जुटा रहता है।

पहाड़ों के साये तले

कथानक

पहाड़ों के साये तले: यह कहानी सुषी के नाम पर उसकी सहेली द्वारा लिखित तीन चिट्ठीयों का संकलन है। सुषी की सहेली पत्र के द्वारा अपनी मानसिक स्थिति का बयान करती है। इसमें प्राकृतिक छटा का वर्णन करती है-"डाक बंगले के बरामदे में खड़ी खड़ी सोच रहीं हूँ कि इस क्षण मैं पाँव तले की धरती के सिवाय, और कहीं नहीं हूँ, कहीं भी नहीं। खड़ी हूँ, सामने चाँदनी में तैरना ताल है। ताल पर मचलती लहरें हैं। लहरों में लहरों की गलबहियों हैं और मैं खड़ी हूँ। चारों ओर खड़े पहाड़ों पर सुनसान फैला है। सुनसान में खोए वृक्षों को चाँदनी चमकती है, चमकाती है, पर जगाती नहीं। ताल से भीग-भीगकर हवा मेरा आँचल फहराती है, पर सहलाती नहीं। और मैं पहाड़ों पर बिछे अंधियारे मौन की तरह स्वयं मौन खड़ी हूँ।" 18 चाँदनी रात में उसे ऐसा लगता है। मानो वह कहीं न होते हुए भी सब जगह है। ग्रामशाला के पेड़ और चबूतरे को देख उसे बचपन के खेल याद आते है। तीन साल बाद वह सुषी को फिर पत्र लिखती है। होटल के रेस्टरों में मिली वृद्धा का चेहरा उसके दिमाग में स्थिर हुआ। शाम को सड़क पर भीड़

है। सभी लोग प्रधानमंत्री नेहरू की प्रतिक्षा में खड़े थे। फिर एक साल बाद कौसानी से नायिका (सहेली) सुषी को एक पत्र लिखती है। चौबाहे पर सामूहिक विकास योजना की जीप खड़ी है। लोंगो की भीड़ जमा करने के लिये फिल्मी रिकार्ड लगाया गया है। रात को नायिका थकी हारी लेटी है। सुबह उठने पर उसे लगा कि वह जहाँ खड़ी है वही वह है।

चरित्र चित्रण

मुख्य पात्र: भीमताल, सुषी, रानीखेत, कौसानी।

गौण पात्र: महिमा, साहब, आदि।

संवाद

कहानी के संवाद कुछ इस प्रकार है - "और गर्म-गर्म चाय की प्याली ढीले थके तन को स्फूर्ति दे गई।"156

"अभी कुछ दिन तो आप यही है ना? एक बार फिर आएगी ना..."157

उदेश्य

कृष्णा सोबती ने इस कहानी में आज के व्यक्ति के विषाद और अकेलेपन को व्यक्त किया है। इसमें नायिका के आस-पास सैकड़ों लोग गुजरते हैं पर उसे कोई नहीं पहचानता है। इस कहानी में सोबती ने सामूहिक विकास योजना और नेहरू तंत्र पर व्यंग किया है।

न गुल था, न चमन

कथानक

न गुल था, न चमन था इस कहानी में जया, माधुरी, नादिरा, नारी पात्र है। जया और माधुरी क्रॉफ्रेन्स से लौटकर कमरे में आते हैं। तब कमरे में एक गुनगुनाहट सुनी-"न गुल था, न चमन था...।" यह आवाज नादिरा दस्तूर की है। वे पासवाले कमरे में ठहरी है। दोनो डिनर पर साथ जाती हैं। जया ने नादिरा की आँखों के कारों पर अतीत की उनींदी रातें देखी। नादिरा की खिलखिलाहट और मीठी आवाज सुन जया को अपने पर क्रोध होता है। भोजन के बाद तुरंत

वह कमरे में वह लौट जाती है। उसे अपनी देंह अपनी नहीं लगती है। देर रात को नादिरा किसी के साथ कमरे में लौटती है। दीर्घ चुम्बन के साथ विदा होकर नादिरा कमरे में फिर गुनगुनाने लगी "न गुल था, न चमन था.... मेरा आशियाना था..... न..... गुल था....।"20

नादिरा कई पुरुषों के संपर्क में खुलती रहती है। लेकिन जया से यह नहीं होता है। जया प्रेम की शीलता के लिये तरसती है और अपनी जीवन एक लाश की तरह महसूस करती है। यह कहानी हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि जया की कुंठा जिम्मेदार है। धर्मपाल की दो पत्नियाँ हैं। शीला पहली पत्नी है। श्यामा दूसरी पत्नी है। श्यामा अपने भाई की बीमारी की खबर पाकर अपने मायके जाती है। धर्मपाल की पहली पत्नी शीला उसी घर में रहती है। लेकिन धर्मपाल और शीला के बीच बातचीत नहीं होती है। शीला अपनी नौकरानी के साथ श्यामा के भाई की खबर पूछने जाती है। श्यामा, शीला को देखकर चकित हो जाती है। धर्मपाल के आते ही श्यामा बेचैन होती है। दोनों, मानों एक दूसरे से अनजान हो, चुप रहते हैं। शीला को इसका दुख था कि दो साल बाद वह पति से मिली है। पति ने उसे एक बार आँख उठाकर देखा भी नहीं। वह दिन भर रोती है। धर्मपाल को अपने किए पर शर्मिन्दगी महसूस होती है। वह स्वयं अपने आप को प्रश्न करने लगा कि क्यों वह शीला से दूर हो गया? श्यामा को घर ले आने पर भी, उसने कोई झगड़ा नहीं किया है। यह सोचकर चुपचाप नीचे उतरा और शीला से मिलने गया। पति को देखकर ही शीला फूट-फूटकर रोने लगी। दो साल पहले जो टूटा था वह आज अब जुड़ गया है। सबेरे धर्मपाल ने जब ऊपर कोठरी में जाकर उसके कपड़े ले आने को कहा तब शीला को लगा कि उसे अपना अधिकार मिल गया है। धर्मपाल को लगता है कि पुराने दिन लौट आए हैं। 'टूटा हुआ तार जैसे फिर जुड़ गया है।" 21

चरित्र चिरण

मुख्य पात्र: जया, माधुरी, नदिरा नारी पात्र हैं।

संवाद

कहानी के संवाद कुछ इस प्रकार है -"मिस माधुरी, बड़ी बेजान-सी जगह लगती है-रात को शायद डिनर पर कुछ रौनक रहेगी। आप सामने के कमरे में हैं न! मैं गुसल ले लूँ, तो आप ही के साथ चलूँगी।"162

उदेश्य

सोबती ने इस कहानी में बहुत दिनों से अलग-अलग जिन्दगी जीते पति-पत्नी को बड़े स्वाभाविक रूप से जोड़ दिया है। शीला एक ऐसी नारी है जिसकी आत्मा उसके पति में ही है। वह उन्हें कितना भी अपमानित करें। पति के लिये अपना संपूर्ण समपर्ण करने में वह अपनी सार्थकता समझती है। कृष्णा सोबती ने इस कहानी में समान स्थितियों में अलग-अलग मनोवृति वाली स्त्रियों की विरोधी प्रति क्रियाओं को व्यक्त किया है।आज के परिवर्तित युग में नारी की विचारधारा परिवर्तित हो गयी है।

एक दिन

कथानक

एक दिन: धर्मपाल इस कहानी का नायक है। धर्मपाल की दो पत्नियाँ है। शीला पहली पत्नी है। श्यामा दूसरी पत्नी है। श्यामा अपने भाई की बीमारी की खबर पाकर अपने मायके जाती है। धर्मपाल की पहली पत्नी शीला उसी घर में रहती है। लेकिन धर्मपाल और शीला के बीच बात चीत नहीं होती है। शीला अपनी नौकरानी के साथ श्यामा के भाई की खबर पूछने जाती है। श्यामा, शीला को देखकर चकित हो जाती है। धर्मपाल के आते ही शयामा बेचैन होती है। दोनों, मानो एक दूसरे से अनजान हो, चुप रहते हैं। शीला को इसका दुख था कि दो साल बाद वह पति से मिली है। पति ने उसे एक बार आँख उठाकर देखा भी नहीं। वह दिन भर रोती है। धर्मपाल को अपने किए पर शर्मिन्दगी महसूस होती है। वह स्वयं अपने आप को प्रश्न करने लगा कि क्यों वह शीला से दूर हो गया? श्यामा को घर ले आने पर भी, उसने कोई झगड़ा नहीं किया है। यह सोचकर चुपचाप कमरे से नीचे उतरा और शीला से मिलने गया। पति को देखकर ही शीला फूट-फूटकर रोने लगी। दो साल पहले जो टूटा था वह आज अब जुड़ गया

है। सबेरे धर्मपाल ने जब ऊपर कोठरी में जाकर उसके कपड़े ले आने को कहा तब शीला को लगा कि उसे अपना अधिकार मिल गया है। धर्मपाल को लगता है कि पुराने दिन लौट आए हैं। "टूटा हुआ तार जैसे फिर जुड़ गया है।"21

चरित्र चिरण

मुख्य पात्र: धर्मपाल इस कहानी का नायक है। शीला और श्यामा धर्मपाल की पत्नियां थी।

गौण पात्र: नंदू, शीला का भाई, रक्खो, महरी आदि।

संवाद

इस कहानी का संवाद कुछ इस प्रकार है - "नहीं, कल ही तार आया है। पता नहीं कैसा है! कोई पास भी है या नहीं।" "बहन, घबराना मत", कहते-कहते शीला के बोल भारी से हो गए, "रास्ते में जरा एहतियात ही बरतना। नन्दू साथ ठीक रहेगा।" फिर बाँहों में पड़ी ढेर सी चूड़ियों की ओर दृष्टि डालकर कहा, "सँभाल ही रखना जेवरों की, बाहें ढकी ही अच्छी हैं। आजकल लोगों का कुछ पता नहीं।"[167]''

उदेश्य

सोबती ने इस कहानी में बहुत दिनों से अलग-अलग जिन्दगी जीते पति-पत्नी को बड़े स्वाभाविक रूप से जोड़ दिया है। शीला एक ऐसी नारी है कि पति में ही उसकी आत्मा है। वह उन्हें कितना भी अपमानित करें। पति के लिये अपना संपूर्ण समपर्ण करने में वह अपनी सार्थकता समझती है।

कलगी

कथानक

कलगी : कलगी का अर्थ है कि सिख लोंगो के माथे पर बाँधे जाने वाले वस्त्र है। इस कहानी की नायिका सुल्लखी है। सरदार जोधसिंह की पत्नी सुल्लखी है। युद्ध लड़ने सरदार

जोधसिंह सुल्लखी से विदा लेता है। दिन भर की लड़ाई के बाद वह थककर सुल्लखी के पास पहुँचता है। अभी जोधसिंह में पहले जैसा जोश नहीं है। जोधसिंह की गहरी निगाहों को देखकर वह (सुल्लखी) ठिठकती है। वह दिन भर जोधसिंह और प्रियजनों की कुशलता के लिये दीप जलाती है। अचानक तोपों और गोलियों की आवाजें सुनाई देती है। फिरंगियों के सामने सैकड़ों धूल में लाशें गिरी। अगली सुबह सुल्लखी ने जोधसिंह की खून से लथपथ देह को देखा। उसके माथे की कलगी पंजाब के माथे की कलगी है।

चरित्र चित्रण

मुख्य पात्र: सुल्लखी कहानी की नायिका है। सरदार जोधसिंह सुल्लखी का पति है।

संवाद

पंजाबी परिवेश की कहानी होने के कारण इसमें पंजाबी का परिवेश दिखाई देता है।

"सुल्लखी सदा की तरह ऊपर अटारी पर जा चढ़ी। आँखें मूंद मन-ही-मन मालिक का नाम लिया और आकाश पर चमकते पहले तारे की ओर आँखें घुमाई।"180

उदेश्य

इस कहानी में जोधसिंह की कलगी सुल्लखी के लिये पूरे पंजाब की कलगी बनती है। इस कहानी में पंजाब ही वास्तिविक नायक है। अपने शौर्य, परंपराओं रीतिरिवाजों खुशियों और गमों के साथ है। एक ऐसा पंजाब जो कभी था अभी नहीं है।

नफ़ीसा

कथानक

नफ़ीसा सात साल की एक बच्ची की कहानी है। नफ़ीसा को अब्बा और अम्मी हॉस्पिटल के जरनल वर्ड में छोड़ देते हैं। नफ़ीसा केवल 'कुछ दिनों की मेहमान थी।"" अकेले में उसे अपनी अम्मी, भाई, बहन और अब्बा की याद आती हैं। वह सोचती है कि उसकी अम्मी बुरी है। वह उसे यहाँ छोड़कर गई और भाई बहनों से अलग कर दिया है। नफ़ीसा हँसती है और

खेलती है। वह जीवन का मोल नहीं जानती है। मौत को भी नहीं पहचानती है। रात को नर्स सूप पिलाती है। वह लेट जाती है। उसकी नाड़ी धीमी हो गई, सांस जल्दी-जल्दी ऊपर नीचे हो उठती है। पलके झपकती हैं। अब वह हमेशा के लिये सो गयी। जहाँ से उसे न अब्बा ला सकेंगे न अम्मी।

चरित्र चित्रण

मुख्य पात्र: यह पूरी कहानी बीमार नफ़ीसा के ऊपर आधारित है। यह मुख्य पात्र है।

गौण पात्र: अम्मी, अब्बा, इक़बाल, नूरी। इक़बाल और नूरी नफ़ीसा के भाई-बहन हैं।

संवाद

इस कहानी के संवाद कुछ इस प्रकार हैं - "'कल अब्बा आएँगे, गुड़िया लाएँगे, गुब्बारा लाएँगे। आहा, अम्मी भी आएगी तो... पर लौट भी तो जाएगी! क्यों नहीं वह मेरे पास रहती ? वह अच्छी नहीं है। ठीक है, अम्मी खराब है। क्यों उसने नूरी और इकबाल से उसे अलग कर दिया है ? दोनों मिलकर खेलते होंगे, नूरी अम्मा के पास सोती होगी, इकबाल अब्बा के पास, और मैं..."183

उदेश्य

सोबती जी ने इस कहानी में बीमार बच्ची की मानसिकता का वर्णन किया है। इतनी बड़ी दुनियाँ में नफ़ीसा के प्रति सहानुभूति, दया और वात्सल्य की भावना उसे कहीं नहीं दिखाई देती है। अकेलेपन के फलस्वरूप बच्चों की मानसिकता किस प्रकार बदलती है। वे मन-ही-मन कैसा महसूस करते हैं। अन्य परिवारजनों से स्नेह कि कमी पाते हैं। अंत में जीवन छोड़ जाते हैं।

मेरी माँ कहाँ...

कथानक

मेरी माँ कहाँ यह भारत और पाकिस्तान विभाजन पर लिखी गयी कहानी है। इस कहानी की नायिका एक मासूम छोटी सी बच्ची है। उसका कोई नाम नहीं है। ब्लोच रेजीमेंट का बहादुर सिपाही यूनस खाँ अपने वतन की आजादी के लिये लड़ता है। उसने कई गाँवों को आग की लपटों में जलते देखा था और लाशों की ढेरों को भी आग में जलते बच्चें, औरते और मर्द उसने देखे हैं। वह जानता है कि आजादी बिना खून के नहीं मिलती है। क्रान्ति से उसका नन्हा सा मूलक पैदा हुआ है। उसकी ट्रक तेज रफ्तार से बढ़ती है। तभी सड़क के किनारे घायल रक्त से भीगी एक बच्ची को देखा। भावुक हो उठता है। बच्ची को अपने सामने देखकर उसे अपनी मृत बहन नूरन की याद आती है। वह बच्ची को साथ रखने का निश्चय करता है। परंतु बच्ची उसे देखकर डर जाती है। उसे लगता है कि यूनस खाँ उसे मार डालेगा। वह मौत की दहरात के एहसास से बुरी तरह घिरती है। यूनस खाँ का हाथ पकड़कर कहती है-"खान, मुझे मत मारना, मारना मत.....।" यूनस खाँ लड़की को सान्तवना देने की चेष्टा करता है। लड़की खान की छाती पर मुट्ठियाँ मारने लगती है- "तुम मुसलमान हो....तुम....."24 वह नफरत से चीखने लगती है- " मेरी माँ कहाँ है, मेरे भाई कहाँ है। मेरी बहन कहाँ है...।'"25

चरित्र चित्रण

मुख्य पात्र: यूनुस खाँ कहानी का नायक है और उस बच्ची के ऊपर विभाजन के समय किस प्रकार उसके घरवालों को मारा काटा उसी पर यह कहानी है।

गौण पात्र: गंगाराम, डॉक्टर, आदि।

संवाद

इस कहानी के संवाद कुछ इस प्रकार है - "काफिर यूनुस खाँ के कान झनझना रहे हैं- काफिर काफिर क्यो बचाया जाए इसे ? काफ़िर?... कुछ नहीं... मैं इसे अपने पास रखूँगा।"189

उदेश्य

सोबती ने इस कहानी में विभाजन के दौरान पैदा हुई मानसिकता को बड़ी कलात्मक से व्यक्त किया है। एक ओर कहानी में पारस्पारिक सद्भाव, विश्वास एवं मानवीयता के विघटन का दर्द है और दूसरी ओर पशुता और दानवता के हाथों में भी कुछ मूल्य भी अभी बचे हैं।

लामा

कथानक

लामा: इस कहानी में बच्चें की कोमल भावनाओं का चित्रण है। बच्चों की टोली में बूढ़े लामा को देखकर हलचल मचती हैं। सभी बच्चें घेरा डालकर उसे चिढ़ाते हैं-

"लामा सीपी खट्टा खा

खट्टा खा के पानी पी

पानी पी के मर जा

मर के 'संजोली' जा।" [26] 'मर जा' शब्द का प्रयोग करते हैं। लेकिन अर्थ जानकर नहीं करते हैं। बच्चों ने उसे गाली समझा था। एक दिन नौकरानी से पता चला कि लामा मर गया है। सब बच्चें खुश हो गये। अब लामा को सफेद कपड़े में बाँधकर सड़क सड़क पर घुमायेंगे। रोज वह आयेगा तो उससे अन्य लोग की कहानियाँ सुनेंगे। बसंत और शिवाजी ने कई दिन घंटों सड़क के मोड़ पर उसकी प्रतीक्षा की। पर वह नहीं आया। वह सोचते है लामा से मिलने पर उससे पूछेगे कि संजोली ले जाकर उसको लोंगो ने क्या किया। कई महीने बीत गए। वह अब बड़े हो गए। लेकिन अभी भी किसी भिखारी की आवाज सुनते तो देखते कि कहीं लामा तो नहीं है। उनकी भोली स्मृतियाँ उनसे कहती हैं कि उस प्रश्नों का क्या किया तुमने जो लामा से पूछना था।

चरित्र चित्रण

मुख्य पात्र: लामा इस कहानी का मुख्य पात्र है।

गौण पात्र: नौकरानी, गांव के सभी बच्चे आदि।

संवाद

इस कहानी के संवाद कहानी को बहुत सुन्दर बनाते हैं जैसे - "और एक दिन नौकरानी के मुँह से सुना कि लामा 'मर गया'। हम बच्चे बहुत खुश हुए। मैंने अपने साथी से कहा, "शिवजी, खूब मज़ा रहा। लामा मर गया। भई वाह-अब बहुत से आदमी उसे सफ़ेद कपड़े में बाँधकर सड़क-सड़क घुमाएँगे। और देखना शिवजी, लामा खूब आराम से लेटे-लेटे 'झूटे' लेगा!"192

उदेश्य

सोबती जी इस कहानी में बाल सुलभ जिज्ञासा वृत्ति को वर्णन किया है। बच्चे स्वभाव से जिज्ञासु होते हैं। वे प्रत्येक स्थिति, व्यक्ति, वस्तु के संबंध में कुछ एक साथ जान लेना चाहते हैं।

दो राहें, दो बाँहें

कथानक

दो राहें, दो बाँहें: यह रोहित और मीनल की प्रेम कहानी है। रोहित एक एकाउंटर में घायल होता है। उसके कधे पर प्लास्टर और आँख पर पट्टी है। मीनल रोहित से प्यार करती है। उसकी देखभाल भी करती है। मीनल के भाई शोभा दा है। शोभन की पत्नी कुंतल हैं। मीनल शोभन को पत्र में रोहित की खबर लिखती है। पत्र पढ़कर शोभन व्याकुल होता है। वह मीनल को आर्शीवाद देता है। अचानक पत्नी कुंतल की याद आती है। तुरंत वह घट जाता है। शोभन यह देखता है कि कुंतल किसी पर पुरुष के संपर्क में है। कुंतल के साथ बेडरूम में गुप्ता को देख कर उसे आश्चर्य होता है। शोभन मीनल से मिलने जाता है। मीनल उससे कुंतल को माफ कर घर वापस लेकर आने के लिए कहती है। लेकिन शोभा को लगता है कि कुंतल अब उसकी परिधि से बाहर है। वह उसे माफ नहीं कर पाता है। रोहित के आखों की पट्टी उतरने पर वह कुछ देख नहीं पाता है। वह आँखों से अंधा होता है। मीनल पर बोझ बन जाने के डर से रोहित आत्महत्या करता है। मीनल जीवन में अकेली रहती है।

चरित्र चित्रण

मुख्य पात्र: मीनल और रोहित कहानी के नायक नायिका है।

गौण पात्र: शोभान, मीनू, डॉक्टर, मृणाल आदि।

संवाद

कहानी के संवादों से हीं पता चलता है कि कहानी कि भाषा कैसी है -उदाहर: "मीनल पाँव बढ़ा तनिक पास हो आई। चिन्तित स्वर से पूछा, "हरि दा, रोहीत क्या बहुत कष्ट में है...?"195

"नीले आकाश पर दो तारे हैं। दो मुख हैं। दो जोड़ी बाँहें हैं। सत्कारती, स्वीकारती एक चाह है। एक चाह है जो धरती पर फैली समय की घाटियाँ माप जाएगी। पठार पर छा जाएगी। धीरे-धीरे नन्हा सा रुपहला चाँद निकल आएगा। अँधियारा बिछुड़ जाएगा। चारों ओर आलोक बिखर जाएगा। फिर भोर हो आएगी। छोटे से घर को चूम जाएगी। रोहित होंगे, रोहित की मीनल होगी और एक हँसता-खेलता नन्हा-मुन्ना छोटे-छोटे पाँव इधर दौड़ा आएगा। रोहित अपनी गर्व-भरी आँखों से हँस संकेत से बुलाएँगे... इधर... इधर..."[206] इन दोनों उद्धरणों से पता चलता है कि वातावरण उस समय कैसा था।

उदेश्य

सोबित जी ने इस कहानी में नारी के दो रूप चित्रित किए हैं। एक ओर नारी पति से किसी प्रकार की तुष्टि न मिल पाने पर तीसरे व्यक्ति के साथ शारीरिक संबंध रखने में हिचकिचाती नहीं। दूसरी ओर नारी अपने प्रेमी के लिए सब कुछ समर्पण करने को तैयार है। शोभन और कुंतल का दाम्पत्य संबंध विहीन होता है। भिन्न मान्यताओं का टकराव दाम्पत्य को बेहद कटु और पीड़ा दायक अनुभव बनाया है।

कृष्णा सोबती की कहानियों में देशकाल-वातावरण

देशकाल और वातावरण लिखते समय उसकी पृष्ठभूमि क्या रही है। अर्थात वह किस समय-काल का है और किस स्थान विशेष का है। वारावरण यानी किन परिस्थितियों में लिखा गया

है, वैसा ही वातावरण तैयार करना होता है। कोई कहानी या नाटक वर्तमान काल की है तो उसकी पृष्ठभूमि में वर्तमान युगीन भाषा-बोली-वेशभूषा- संस्कृति आदि चित्रण किया जाना चाहिए। कोई मध्ययुगीन काल का है या मुगलकालीन है तो उस समय विशेष में प्रचलित संस्कृति-लोकव्यवहार की बातें-परिस्थितियाँ-भाषा-बोली-वेशभूषा का वातावरण तैयार करना पड़ता है।

कृष्णा सोबती नें अपनी हर एक कहानी की स्थिति, समय और वातावरण को अच्छे से दर्शाया है। उन कहानियों की पृष्ठभूमि से लेकर वर्तमान स्थिति क्या रही थी उन सभी का मार्मिक चित्रण किया है। सिक्का बदल गया, डरो मत, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा और मेरी माँ कहाँ यह तीनों कहानियाँ भारत विभाजन पर आधारित होने पर कृष्णा सोबती ने भारत - पाकिस्तान की पृष्ठभूमि से लेकर भारत - पाकिस्तान का विभाजन की वर्तमान स्थिति, समय, तथा वातावरण को अपनी कहानियों में भाषा के माध्यम से दर्शाया है। देशकाल में स्थान एवं समय विशेष की घटनाएँ चित्रित की जाती है। देशकाल से हमारा तात्पर्य उसमें वर्णित आचार-विचार, रीति-रिवाज़, रहन-सहन और परिस्थितियाँ आदि से है। कृष्णा सोबती ने अपने कहानी के पत्रों के माध्यम से कहानी के पत्रों का रहन-सहन, रीति-रिवाज़ आदि का वर्णन किया है। दादी अम्मा कहानी में दादी के ज़माने में जो रीति-रिवाज़ और उनके आचार-विचार थे और 'दादी अम्मा' कहानी में वर्तमान स्थिति जो उसके बहु के आने से किस प्रकार बदलती है यह देखने को मिलता है। दो पीढ़ि का संघर्ष दिखाई देता है। 'यशपाल जी' द्वारा चित्रित दो पीढ़ी का संघर्षमय वातावरण निखार उठा है।

मध्य वर्ग के व्यक्तियों की स्थिति वास्तव में साँप छछूंदर जैसी होती है। वे न कह सकते हैं, न सह सकते हैं। फिर भी अपने परिश्रम के आधार पर कैसे भी गुजारा कर लेते हैं। कृष्णा सोबती की कहानियाँ ज्यादातर मध्ययवर्गीय परिवार के जीवन पर आधारित है। उन्होंने उनकी हर एक समस्याओं का वर्णन अपनी कहानियों में किया है।

कृष्णा सोबती की कहानियों में भाषा शैली

युग की बदलती परिस्थितियों एंव जीवन बोध के अनुकूल भाषा का स्वरूप परिवर्तित होता है। व्यक्ति की मनोदशाओं एंव यथार्थ की सूक्ष्म संवेदनाओं के लिए सार्थक भाषा की जरूरत है। सोबती ने संप्रेषणीयता हेतु सही भाषा को ढूँढ़ने का प्रयास किया है। उन्होंने अपने अभिनव भाषिक प्रयोगों से कथा भाषा का नया रूप दिया है। सोबती ने युग संवेदना के अनुकूल भाषा की तलाश की । लेखिका की कहानियों में युग संवेदना के अनुकूल कथा भाषा का प्रयोग है।

कृष्णा सोबती की भाषा शैली सहज, सरल, और व्यवहारिक है वे प्राय: प्रसंगानुकूल और पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग करती है। प्रस्तुत संस्मरण 'मियाँनसीरुद्दीन' में उन्होंने उर्दू मिश्रित भाषा का प्रयोग किया है।

कृष्णा सोबती नें अपनी कथा भाषा में तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी आदि शब्दों का प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त कृष्णा सोबती नें कहानियों में ध्वन्यातमक और द्वित्वकृत शब्दों का भी प्रयोग किया है। उन्होंने अपनी कथा भाषा में वाक्य रचना - जैसे सरल, संयुक्त, तथा मिश्र वाक्य का प्रयोग किया हैं। प्रोक्तियोजना, मुहावरे और लोकोक्तियाॅं आदि कृष्णा सोबती की भाषा में देखने को मिलती हैं। तथा उन्होंने अपनी कहानियों में विवरणात्मक तथा वर्णात्मक शैली का भी प्रयोग किया हैं।

निष्कर्ष

हिन्दी कहानीकारों में कृष्णा सोबती का नाम विशेष उल्लेखनीय है। बादलो के घेर 'कहानी संग्रह की कहानियों का विश्लेषण करने से यह स्पष्ट होता है कि कृष्णा सोबती ने विविध विषयों से संबंधित विविध प्रकार की कहानियों का सृजन किया है। उन्होंने अपनी कहानियों में माध्यवर्गीय पारिवारों की समस्याओं को सामने लाकर उनपर गंभीरता से गौर किया है। सोबती की कहानियाँ जीवन के विविध क्षेत्रों का जीवंत साक्षात्कार कराती हैं। चाहे क्रांतिकारी जीवन हो, प्रेम का क्षेत्र हो, भारत विभाजन से उत्पन्न मनः स्थितियों हो या जीवन की जटिलता, घुटन, पीड़ा निराशा का चित्रण किया हैं। सामाजिक पारिवारिक विघटन इनकी कहानियों में मिलता है। महिला होने के नाते स्त्री वर्ग की कठिनाईयों को सहज स्वाभाविक रूप से व्यक्त किया है। नारी के ऊपर पड़े नैतिक रूढ़ियों के आवरण को हटाया है। उन्होंने समाज में फैली वितृष्ण को स्वीकार किया है। अपनी कहानियों के माध्यम से उसे अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है।

कृष्णा सोबती की भाषा के विषय में हम कह सकते हैं कि उन्होंने विशिष्ट भाषा और शब्दावली के प्रयोग द्वारा कहानी को अधिक सार्थक बनाने का प्रयत्न किया है। पंजाबी भाषा भाषी होने पर भी उन्होंने हिन्दी में कहानियाँ लिखी हैं। उन्होंने हिन्दी भाषा में उर्दू, फारसी, देशज, पंजाबी एवं क्षेत्रीय भाषाओं के शब्दों को अपनाते हुए भाषायी समन्वय का प्रयास किया है। सोबती ने अत्यधिक सफलता से प्रतीकों और बिम्बों के प्रयोग में नवीनता और मौलिकता का परिचय दिया है।

संदर्भ

1. भारतीय लेखिकाओं से साक्षात्कार डॉ. रणवीर संग्रा - पृ.सं 60

2. कृष्णा सोबती - बादलों के घेरे में पृ.सं. 45

3. वही, पृ.सं. 56

4. वही, पृ.सं. 73

5. वही, पृ.सं. 73

6. वही, पृ.सं. 74

7. वही, पृ.सं. 90

8. वही, पृ.सं. 106

9. वही, पृ.सं. 115

10. वही, पृ.सं. 115

11. वही, पृ.सं. 116

12. वही, पृ.सं. 128

13. वही, पृ.सं. 133

14. वही, पृ.सं. 138

15. वही, पृ.सं. 140

16. वही, पृ.सं. 143

17. वही, पृ.सं. 145

18. वही, पृ.सं. 150

19. वही, पृ.सं. 161

20. वही, पृ.सं. 164

21. वही, पृ.सं. 177

22. वही, पृ.सं. 182

23. वही, पृ.सं. 190

24. वही, पृ.सं. 190

25. वही, पृ.सं. 190

26. वही, पृ.सं. 191

27. डॉ. वाई रवि सुबोध हिन्दी व्याकरण पृ.सं. 7

28. श्रीशरण बजरंग व्यावहारिक व्याकरण पृ.सं. 63

29. कामता प्रसाद गुरु हिन्दी व्याकरण पृ.सं. 509

30. कृष्णा सोबती बादलों के घेरे में पृ.सं. 45

31. वही, पृ.सं. 9

32. वही, पृ.सं. 16

33. वही, पृ.सं. 19

34. वही, पृ.सं. 21

35. वही, पृ.सं. 25

36. वही, पृ.सं. 36

37. वही, पृ.सं. 42

38. वही, पृ.सं. 44

39. वही, पृ.सं. 50

40. दादी अम्मा पृ.सं. 32

41. वही, पृ.सं. 33

42. वही, पृ.सं. 41

43. वही, पृ.सं. 41

44. भोले बादशाह पृ.सं. 47

45. वही, पृ.सं. 51

46. वही, पृ.सं. 52

47. वही, पृ.सं. 54

48. वही, पृ.सं. 50

49. पहाड़ों के साये तले पृ.सं. 156

50. कामदार खीभमलाल पृ.सं. 146

51. आजादी शम्मोजान की पृ.सं. 143

52. खम्माचणी अन्नदाता पृ.सं. 127

53. वही, पृ.सं. 128

54. अभी उसी दिन ही तो पृ.सं. 104

55. कृष्णा सोबती - बादलों के घेरे में पृ.सं. 13

56. वही, पृ.सं. 21

57. वही, पृ.सं. 39

58. वही, पृ.सं. 42

59. वही, पृ.सं. 44

60. कृष्णा सोबती - बादलों के घेरे में पृ.सं. 46

61. वही, पृ.सं. 48

62. वही, पृ.सं. 49

63. वही, पृ.सं. 19

64. वही, पृ.सं. 27

65. वही, पृ.सं. 32

66. वही, पृ.सं. 34

67. वही, पृ.सं. 111

68. वही, पृ.सं. 78

69. वही, पृ.सं. 69

70. वही, पृ.सं. 108

71. वही, पृ.सं. 104

72. वही, पृ.सं. 134

73. वही, पृ.सं. 145

74. वही, पृ.सं. 179

75. वही, पृ.सं. 150

76. वही, पृ.सं. 34

77. वही, पृ.सं. 41

78. वही, पृ.सं. 52

79. वही, पृ.सं. 52

80. वही, पृ.सं. 59

81. वही, पृ.सं. 75

82. वही, पृ.सं. 75

83. वही, पृ.सं. 80

84. वही, पृ.सं. 202

85. वही, पृ.सं. 81

86. वही, पृ.सं. 117

87. वही, पृ.सं. 126

88. वही, पृ.सं. 186

89. वही, पृ.सं. 14

90. वही, पृ.सं. 16

91. वही, पृ.सं. 16

92. वही, पृ.सं. 16

93. वही, पृ.सं. 17

94. वही, पृ.सं. 17

95. कृष्णा सोबती - बादलों के घेरे में सिक्का बदल गया पृ.सं. 140

96. कृष्णा सोबती - बादलों के घेरे में गुलाब गंडेरियाँ - पृ.सं. 74

97. वही, पृ.सं. 65

98. कृष्णा सोबती - बादलों के घेरे में डरो मत मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा- पृ.सं. 115

99. कृष्णा सोबती - बादलों के घेरे में पहाड़ों के साये तले पृ.सं. 150

चतुर्थ अध्याय

भाषा शैली

भाषा का अवधारण - स्वरूप एवं प्रकार

भाषा का मनोभाव को प्रकट करने का एक साधन है।

"इदमन्धंतमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम् ।

यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरास सांर न दीप्यतो।"1

इस उद्धरण में दंडी ने कहा कि सृष्टि के आंरभ में शब्द की ज्योति न जलती तो त्रिभुवन घोर अंधकारमय होता है। मानव समाज में रहने के कारण अपने विचारों की अभिव्याक्ति किए बिना नहीं रह सकता है। वह संकेतों से बोलने से एवं लिखने से अपने मनोभवों को अभिव्यक्त करता है। अपने चारों ओरों की प्रकृति को देखकर, पशु-पक्षियों के द्वारा किये जानेवाली ध्वनियों को वह ध्यान से सुनने लगा। पक्षियों की चहक से जैसे कुहकुह, कुहकु आदि, जानवरों से किये जानेवाली आवाजों से जैसे हाथी को जिंघाडना, घोडे का हिन-हिनाना, शेर का दहाडना, कुत्ते का भौं भौं, बिल्ली का म्याऊ, गाय का रंभण आदि। वर्षा से रिमझिम, नदी के बहाव से झरझर, किसी भारी चीज़ का ऊपर से नीचे गिरने से सुनायी देनेवाली ध्वनि से धम्म आदि शब्दों को वह जोडने लग गया। धीरे धीरे ये शब्द सुघटित होकर भाषा में परिणत हुए। इन्हीं शब्दों पर भाषा का महल खडा हुआ। भोलानाथ तिवारी ने कहा- "मनुष्य ने अपने आसपास के पशु पक्षियों आदि क द्वारा होने वाली ध्वनियों के अनुकरण पर अपने लिए शब्द बनाये और उसी आधार पर पूरी भाषा बनी।"2

मानव जो समझता है, उसे अभिव्यक्ति करना चाहता है। इस अभिव्यक्ति का आधार ही भाषा है।

भाषा की अवधारणा :

"व्यक्तवाचां समुच्चारणें ।"[3]

उपर्युक्त उद्धरण में महान भाषा विज्ञानी पणिनी अष्टाध्यायी में कहता है कि भाषा का प्रयोग मनुष्य के उच्चारण अवयवों द्वारा उच्चरित ध्वनि संकेत के लिए होता है।

लेकिन 'भाषा' शब्द संस्कृत की भाष धातु से बना है। इसका अर्थ है कि बोलना या कहना। उच्चारण ही भाषा को सहज रूप है।

"पशु ध्वनि से ही मनुष्य की भाषोत्पत्ति हुई है।"4

इससे स्पष्ट होता है कि जो बोली और सुनी जाती है और बोलना भी पशु पक्षियों का नहीं, गूँगे मनुष्यों का भी नहीं, केवल बोल सकने वाले गनुष्यों का है। उसे भाषा कहतें है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य एक दूसरे के साथ विचार विनिमय अवश्य करता है। मनुष्य जिस साधन के माध्यम से विचार विनिमय को निश्चित तथा सुविधाजनक बनाने के लिए इकट्ठा होकर वस्तुओं एवं क्रियाओं के लिए प्रतीकात्मक ध्वनि संकेत निश्चित करता है। उससे भाषा का जन्म हुआ।

निष्कर्ष

भाषा समाज द्वारा प्रयुक्त होती है। इसके कारण समाज के संदर्भ परिवर्तशील होते हैं। समाज के साथ भाषा भाषी वर्ग जैसे वकील, डा ॅक्टर, व्यापारी आदि का अलग समुदाय है। इनकी अभिव्यक्ति की आवश्यकताएँ भिन्न हैं। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी वैयक्तिक भाषा होती है। उसी प्रकार समाज के उपखंडों की अपनी भाषा होती है। किसी भी भाषा के व्यवहार क्षेत्र की सीमा उसकी शैलियों को नियंत्रित करती है।

जैसे भाषा और मानव का सम्बन्ध है वैसे ही भाषा व साहित्य का सम्बन्ध है। मन के भावों की अभिव्यक्ति भाषा करती है। और इसी भाषा द्वारा साहित्य सृजन म भाव, कल्पना, संवेदना को अभिव्यक्ति मिलती है। भाषा की अवधारणा अत्यंतिक प्राचीन है। समय के साथ भाषा का स्वरूप व चिंतन बदलता गया। भाषा कई रूप लिए चलती है। सामाजिक बदलाव का प्रभाव भाषा पर अवश्य पड़ता है।

संदर्भ

1. डॉ. मोतीलाल चतुर्वेदी सरल सुबोध हिन्दी व्याकरण पृ. सं. 1

2. प्रो. भोलानाथ तिवारी-भाषा विज्ञान-पृ. सं. 2

3. पं. कामतानाथ प्रसाद गुरु- हिन्दी व्याकरण- पृ. सं. 1

4.आचार्य जयेंद्र त्रिवेदी- हिन्दी रूप रचना- पृ. सं. 3

5. जियालाल हण्डू रघुनाथ सफाया- भाषा और साहित्य का विवेचन-पृ. सं. 4

कृष्णा सोबती के कहानियों में शब्द चयन :

"कान से प्राप्य, बुद्धि से ग्राह्य तथा प्रयोग से स्फुरित होने वाली आकाशव्यापी ध्वनि शब्द है। "27- पतंजलि किसी ध्वनि समूह को शब्द कहते हैं। उत्पत्ति या इतिहास के आधार पर शब्द चार प्रकार के होते है। तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी।

तत्सम : संस्कृत से आए शब्द हिन्दी में ज्यों का त्यों प्रयुक्त होते हैं। उसे तत्सम शब्द कहते है। उदा. सुख, दृष्टि, स्पर्श आदि।

तद्भव : संस्कृत के शब्द कुछ बदलकर हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं। उसे तद्भव शब्द कहते हैं। उदा. पानी, भूखा, घड़ी, जंगल आदि।

देशज : जो शब्द देश की विभिन्न बोलियों या क्षेत्रीय बोलियों से हिन्दी में आते हैं। उसे देशज कहते हैं। उदा. खिड़की, गाड़ी पैसा आदि।

विदेशी : जो शब्द अरबी, फारसी, अंग्रेजी तुर्की, पंजाबी आदि भाषाओं से हिन्दी में आते है। उसे विदेशी शब्द कहते हैं। उदा. अरबी-किताब, दुनिया, फारसी-रूमाले, जिंदगी, जमीन, अंग्रेजी कॉलेज, डॉक्टर, ट्रैन, तुर्की-गलीचा, बुलबुल, आर्दा। इसके अतिरिक्त कृष्णा सोबती ने कहानियों में ध्वन्यात्मक और द्वित्वकृत शब्दों को भी प्रयोग किया हैं।

कृष्णा सोबती की कहानियों की वाक्य रचना :

"एक विचार पूर्णता से प्रगट करनेवाले शब्द समूह को वाक्य कहते हैं।"" कर्ता कर्म और क्रिया के क्रम को वाक्य रचना कहते हैं। इसे अंग्रेजी में Syntax कहते हैं। हिन्दी और अंग्रेजी की वाक्य रचना में काफी अंतर होता है। दोनों भाषाओं में वाक्य का आरंभ कर्ता से ही होता है। उदाहरण के लिए Ram is a boy, राम एक लडका है, को लीजिए। हिन्दी में भी वाक्य राम से ही शुरू होता है। अंग्रेजी में कर्ता के बाद क्रिया आती है। जैसे is' उसके बाद कर्म boy आता है। पर हिन्दी किया है कर्म 'लड़का के बाद आती है। हिन्दी में कर्ता के अनुसार क्रिया का लिंग बदलता है। लेकिन अंग्रेजी में क्रिया बदलती नहीं है।

उदा. Ram goes राम जाता है।

Sita goes सीता जाती है।

रचना की दृष्टि से वाक्य तीन प्रकार के होते है। सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य और मिश्र वाक्य।

सरल वाक्य: सरल वाक्य में एक कर्ता, कर्म और क्रिया होता है।

उदा. बहू सच कहती है। "

Doughter-in-law speaks truth.

हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में अंतर यह है कि हिन्दी के वाक्य में सबसे पहले कर्ता फिर कर्म और वाक्य के अंत में क्रिया आती है। अंग्रेजी में ऐसा नहीं है। अंग्रेजी के वाक्य में सबसे पहले कर्ता Daughter-in-law आती है फिर Speaks किया और अंत में Truth कर्म आती है। हिन्दी भाषा का नियम अंग्रेजी भाषा के नियम से भिन्न है। सोबती की कहानियों में सरल वाक्य इस प्रकार हैं-

1. मैं उठता हूँ।"31

2. मुझे भुवाली जाना था।"32

3. मैं लज्जित-सा बैठा रहा।"33

4. बुआ चुप सी रह गई।"34

5. सच ही में ठहरा नहीं।"35

6. अम्मा ने सिर हिलाया।"36

7. दादी ने बहुत जल्दी की।"37

8. बापू ने सिर हिला दिया।"38

संयुक्त वाक्य : इसमें दो या अधिक वाक्य समुच्चबोधक अव्ययों के द्वारा जुड़े रहते हैं। उदा.- मैं लेटा रहता हूँ और सुबह हो जाती है।"39

I will be lying down and morning dawne.

इसमें मैं लेटा रहता हूँ। एक स्वतंत्र वाक्य है। सुबह हो जाती है। दूसरा स्वतंत्र वाक्य है। दोनों स्वतंत्र वाक्यों को समुच्चयबोधक अव्यय 'और' से मिलाकर संयुक्त वाक्य बनाया गया है। अंग्रेजी में भी दो स्वतंत्र वाक्य होती है। लेकिन अंग्रेती में कर्ता + क्रिया कर्म आती हैं दोनों भाषाओं में वाक्य रचना अलग है। कृष्णा सोबती के कहानियों में संयुक्त वाक्य इस प्रकार हैं-

1. बहु ससुर के चरणों में झुकी थी और उन्होंने सिर पर हाथ रखकर कहा था बहू रानी। 40

2 बहु के भाग्य में फल होते हैं। और परिवार की बेल बढ़ती है।"41

3. दादी अम्मा बार-बार करवट बदलती है और फिर कुछ-कुछ देर के लिए हाँफकर पड़ी रह जाती हैं।42

4. क्षण भर रुककर आँखे खोली और मेहरों को देखती रह गई।43

5. फुर्ती से सड़क पार की और कूदकर कुल्लेवाली दुकान पर जा बैठा।"44

6. दुपहर चढी और उतर गई। 45

7. अम्मा ने हाथ दिया और हरवंसा घेर कर भोले को बिछौने ने तक ले आया। 46

8. कपड़ों से पानी निचुड़ रहा था और फिर सिर से बाल माथे पर झुक आए थे। 47

मिश्र वाक्य : इसमें एक मुख्य वाक्य और एक या अधिक आश्रित वाक्य होते हैं।

उदा.- सफर में इतना थक गई थी कि कान्फ्रेंस में भी नही जा सकी।

I was damm tired. So i could not go to Conference.

इस वाक्य मे "सफर" में इतना थक गई थी। यह मुख्य वाक्य है। 'कान्फ्रेंस में भी नहीं जा सकी।' यह आश्रित वाक्य है। अंग्रेजी में भी एक मुख्य वाक्य और एक या अधिक आश्रित वाक्य होता हैं। कृष्णा सोबती की कहानियों में मिश्र वाक्य इस प्रकार है।

1. अन्दर-बाहर, गली-मुहल्ले कहता फिरता है कि अब डोला लेकर ही घर जाऊँगा। "48

2. मैं देखती रह गई कि राह के दोनों ओर बिखरी जनता कहाँ है। "49

3. मन ही मन बहुत कुछ सोचा और आखिर नजीजे पर महुँचे कि दरोगा की बताई बात गलत नहीं हो सकती। "50

4. शम्मोजान देखती है कि मुन्नी आज जिस आजादी की बात सोचकर गहरी नींद में सो गई है।" 51

5. महाराज चाहते हैं कि हाथ बढ़ाकर इस जोर जबरदस्ती को रोक दें।" 52

6. जनता भी जैसे कोई उठाऊ चूल्हा हो कि जिसने चाहा, उठाकर इसका मुँह अपी ओर कर लिया।"53

7. उसे लगा था कि अब उन पलकों में उस भारी बिदाई के बाद रंग नहीं आएगा। "54

अंग्रेजी और हिन्दी मिश्रित वाक्य: कभी-कभी सुविधा के कारण या आसानी से समझाने का प्रयत्न करते समय पढ़े-लिखे लोग हिन्दी और अंग्रेजी को मिलाकर बोलते हैं। इसे लोग 'HINGLISH' कहते हैं। कृष्णा सोबती की कहानियों में 'HINGLISH' के कई उदाहरण मिलत हैं-

1. कार स्टार्ट हुई। पृ.सं. 13 कृष्णा सोबती बादलों के घेर

2. बस से उतरा। पृ.सं. 16 कृष्णा सोबती बादलों के घेरे

3. टैक्सी खड़ी थी। पृ.सं. 13 कृष्णा सोबती - बादलों के घेर

4. सूटकेस पर झुक रही। पृ.सं.13 - कृष्णा सोबती बादलों के घेर

5. ड्राइंग रूम से निकलता हूँ। पृ.सं. 11 कृष्णा सोबती - बादलों के घेर

6. बाथरूम में पहुँच गया। 14 कृष्णा सोबती - बादलों के घेर

7. स्टेशन पर जाने लगा। पृ.सं. 21 कृष्णा सोबती - बादलों के घेर

अपूर्ण कथन : वाक्य वक्त के भावों को पूर्णतः अभिव्यक्त करता है। कभी-कभी वक्ता अपने कथनों को बीच में छोड़ता है, जिससे भावाभिव्यक्ति में कोई बाधा उत्पन्न नहीं होती है। ऐसा अपूर्ण कथन भाषा को सुन्दर बनाता है। सोबती की कहानियों में इस प्रकार के अपूर्ण कथन हैं-

1. वह छोटी सी खिलखिलाहट, वह कड़वाहट से परे का व्यंग्य, आज इतने वर्षों के बाद थी, मैं वैसे ही बिल्कुल वैसे ही सुन रहा हूँ। वही शब्द है, वहीं हँसी और वही पीली-सी सूरत...।55

2. रवि, तुमने पाँव छुये हैं, तो आर्शीवाद जरूर दूँगी... बहुत सुन्दर बहू पाओ । 56

3. ममता-भरी पुरानी आँखों से निहार कर बार-बार आर्शीवाद बरसती चली जाती है, "सुख पाओ, भगवान बड़ी उम्म्र दे...।57

4. "अम्मा, बहुओ को आशीष देती जाओ... "मेहरों के गीले कंठ में आग्रह था. विनट भी।58

5. बेटे ने हड़बड़ाकर आँखें खोली। कई क्षण द्वार की ओर देखते रह गए। अब कहाँ आएगी अम्मा इस देहरी पर...।59

6. अम्मा के कुछ लगती की लाडली को भी पकड़ लाऊँगा। अरे, उसे डोले में डालकर आऊँगा, अह.आ.हा....हा.. उसे व्याहकर लाऊँगा उसे ब्याहकर....60

7. अरी ओर, बड़े ही मनचली बहु, बाहर तो आ!_नहीं बोलती। मर-खप गई है, तो भी बhता दे....।61

8. आ मेरे लाल, कुछ खा-पी ले... बेटे के लिए आसन बिछा अम्मा ने थाली परोसी और पीठ पर लाड का हाथ रखा बोली, "खा बेटा था।62

हम कह सकते हैं कि कृष्णा सोबती जी वाक्यों का निर्माण अपने ढंग से करती है। वह व्याकरण के सूत्रों को मानती नहीं है। उदा.

1. क्या था उस झिझक में।63

2. हम सुखी है कितने?64

3. फल किसे कहती हो माँ?65

4 हुक्म हासिल तुम्हारा है।66

5. जानता हूँ माँ।67

इन वाक्यों के व्याकरण रूप इस प्रकार है।

1. उस झिझक में क्या था?

2. हम कितने सुखी है?

3. माँ फल किसे कहती हो।

4. तुम्हारा हुक्म हासिल है।

5. माँ जानता हूँ।

कृष्णा सोबती के कहानियों में प्रोक्तियोजना : उस उक्ति को हम प्रोक्ति कह सकते हैं। जो किसी विशेष संदर्भ में विशेष मानसिक स्थिति का विश्लेषण जो सिर्फ पात्र पर ही नहीं सभी पर लागू हो सके। प्रोक्ति का अर्थ है कि कही गयी विशेष बात। जैसे चरित्र चित्रण तीन प्रकार से होता है। उसी प्रकार प्रोक्ति में भी तीन प्रकार है। पहली पात्र अपने बारे में खुद कहता है। उसे चिन्तन प्रोक्ति कहते हैं। दूसरे अन्य पात्र एक पात्र के बारे में अर्थात् प्रमुख पात्र के बारे में अपने विचार प्रकट करते हैं। उसे संवाद प्रोक्ति कहते हैं। तीसरा खुद लेखक पात्रों के बारे में अपने विचार को प्रकट करता है। उसे वर्णन प्रोक्ति कहते हैं।

कृष्णा सोबती ने अपनी कहानियों में इस प्रकार की प्रोक्तियों का उपयोग किया है।

चिन्तन प्रोक्ति : "क्या लिखूँगी, नहीं जानती, बस एक ही बात मन में उठ आती है कि मरना सचमुच में मर जाना होता है। न तन रहता है, न राग, न अनुराग। अपने आपको देखती हूँ और रो देती हूँ। रूलाई के ऐसे ही क्षणों में यह गीली आँखें तुम्हें याद कर लाई है।"68- कुछ नहीं कोई नहीं

संवाद प्रोक्ति : "साध्वी माँ, आश्रम में मन नहीं लगता... 'साध्वी माँ शांत बैठी रहीं। वह क्यों हिलेंगी।

यह मोह-माया का आवरण है जो

उसे कोई सुख नहीं देता।

"उपवास करो।"

"क्या होगा उपवास कर"

"शांति मिलेगी।"

"नहीं, साध्वी माँ कल्याणी ने

प्रतिवाद करना चाहा।

"इसे भजन में लगाओ।"69 - बदली बरस गई।

" जया ने सीढ़ियों से उतरते-उत्तरते अविनाश की बाँह थागी। जी उदास हो आया। बिछुड़े वर्षों की आँखों में छूट गए भूल गए चेहरे उभर-उभर आए।

'इधर आओ माँ, संभालकर पगधरो अविनाश ने माँ को घेरते हुए थामा। बेटे के बलिष्ठ हाथों के नीचे की बाँह हल्के से कॉपकर रह गई।

"इधर आओ, इधर आओ जया-जया माँ के पाँव सधे नहीं। ऊपर का औ कार उसके पैरों तले बिछता चला जा रहा है। अवश-सी देह से लगा आँचल सिहरता है।

"जया संभालकर, दूर मत रहो, इधन आओ न...।" 70 दोहरी साँझ यह घर उसका है, उसका अपना है, तब से है जब इस आँगन में वह अधिकार पूर्ण गर्व से नन्हें-नन्हें बच्चों की देखभाल करते-करते खीज और ममता में मुस्करा दिया करती थी और उस मुस्कुराहट को प्यार से चूम लेने वाली पति की यह मीठी और अपनेपन में घुली दृष्टि... और उस दृष्टि का अनुसरण करने वाली, वह स्वयं आज यहाँ है। वे दिन खुले खुले हल्के, और बंधी बंधी उनींदी राते. - एक जमाना बीत गया लगता है।"" अभी उसी दिन ही तो

वर्णन प्रोक्ति: चनाब का पानी आज भी पहले सा सर्द था, लहरे लहरों को चूम रही थी। वह दूर-सामने कश्मीर की पहाड़ियों से बरफ पिघल रही थी। उछल-उछल आते पानी के भँवरों से टकराकर कगारे गिर रहे थे, लेकिन दूर-दूर तक बिछी रेत आज न जाने क्यों खामोश लगती थी।" 72 सिक्का बदल गया।

"कामदार भीखमलाल ने बालों पर गहरा हाथ फेरा, कोने में पड़ी लड़की की पेटी से उठाकर साफा सिर पर रखा और दहलीज के पास जूती प हनकर बाहर निकल आए। माथे पर कामदारी के तेवर थे। तेवरों के नीचे किन्हीं खुफियाँ परदों में से झाँकती दो आँखे थी। और आँखों को रोबदार बनाता हुआ। सिर से लिपटा बहुत बड़ा साफा था। उनकी जूती की ऐड़ियाँ घिसी हुई थी, लेकिन चाल में दम था।"73

दुपहर डली, फीकी-सी शाम पश्चिम में उत्तर आई। डूबते सूरज की लाली में आज पीलाई अधिक थी और आकाश में एक ओर किसी अदृश्य परदे में से उभर कर आती हुई तीतर-पंखी बदली फैलाती जा रही थी। सुल्लखी ने बंधे-बंधे दिन के बाद किसी तरह अपने को संभला। याद आया चिलियाँवाला की लड़ाई का वह भयानक दिन जब आज ही की तरह जोधसिंह उससे विदा लेकर गया था। फिरंगियों का नाम सुनकर सुल्लखी का दिल बैठा जा रहा था। आकाश से आँख फड़क रही थी, पर जाते जाते जैसे जोधसिंह की आवाज ने उसे आश्वासन दिया।"74

"डाक-बेंगले के बरामदे में खड़ी खड़ी ढूढ़ रही हैं कि इस क्षण में पाँच तले की धरती के सिवाय, और कहीं नहीं है, कहीं भी नहीं, खड़ी है, सामने चौदनी में तैरता ताल है। ताल पर मचलती लहरे हैं। लहरों में लहरों की गलबहियाँ है।

और मैं खड़ी हूँ चारों ओर खड़े पहाड़ों पर सूनसान फैला है। सूनसान में खोए वृक्षों को चाँदनी चमकाती है, चमकाती है, पर जगाती नहीं। ताल से भीग भीगकर हवा मेरा आँचल फहराती है, पर सहलाती नहीं और मैं पहाड़ों पर बिछे अँधियारे मौन की तरह स्वयं मौन बनी खड़ी हैं। 75

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रोक्तियों के सफल प्रयोग में भी कृष्णा सोबती जी को सफलता प्राप्त हुई है।

कृष्णा सोबती के कहानियों में मुहावरें और लोकोक्तियाँ :

मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा आकर्षक और प्रभावशाली बनती है। मुहावरों को अंग्रेजी में Idiom तथा कहावत या लोकोक्तियों को Proverb कहते हैं। कृष्णा सोबती ने कहानियों में भाषा को सुन्दर और प्रभावशाली बनाने के लिए इस प्रकार की मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग किया है।

जीना दूभर कर देना : "बहू, यह सब तुम्हारे अपने सामने आएगा। तुमने जो मेरा जीना दूभर कर दिया है, तुम्हारी तीनों बहुए भी तुम्हें इसी तरह समझेंगी, समझेंगी क्यों नहीं, जरूर समझेंगी।"76

माथा ठकना : "दोपहर को नौकर जब अम्मा के यहाँ से अनछुई थाली उठा लाया तो मेहरा का माथा ठनका।"77

"भौजाई का माथा ठनका।"78

तेवर चढ़ाना : "तेवर चढ़कार बहू पर बरस पड़ी, अरी सयानी बहू खड़ी-खड़ी क्या तकती है? जाकर बिछौना लगा।"79

"बुढ़िया ने तेवर चढ़ाकर बहू की ओर देखा।"80

धूल फाँकना : "धन्नो के सूखते कंठ के साथ-साथ अपनी सास का वह तेवर भरा चेहरा याद हो गया, जिसे सिकोड़कर वह उसे धूल फाँकने को कहा करती थी।"81

"फिर बुढ़िया उम्र-भर एक ही कोठरी से लगी रही है। क्या समझेगी वह इस धूल फाँकने को।"82

आँखे अंधी कर लाना : "चाहा कि एक बार पुरानी आँखों से अपने आनंद को देखें, पर मन की व्यथा किसी गहरे उलाहने से आँखे अंधी कर लाई।"83

जी कड़ा करना: "बिस्तर पर पड़ी पड़ी एक बार उस निर्जीव नन्ही काया को देख। और जी कड़ा कर आँखे मूँद ली।"84

"जी कड़ा करो शिवा बहन।"85

दुश्मनों के दिलों पर बीतना : "कभी साफ-सुथरा साफा बाँध, हाथ भर का शमला छोड़ सरदार गाँव में निकलता है तो दुश्मनों के दिलों पर बीत जाती है।"86

पैरों के नीचे से जमीन खिसकना : 'यह समाचार झूठ भी तो नहीं। सच ही तो है। हाँ, बिल्कुल सच! पर यह कैसा सच है? जैसे पैरों के नीचे से जमीन खिसकी जा रही हो।"87

आँखे खून मारना : 'इस हल्की-फुल्की सर्द रात में भी 'काफिर की बात सोचकर ब्लोच जवान की आँखे खून मारने लगी।"88

हम कह सकते हैं कि इस प्रकार के मुहावरे और लोकोक्तियों से सोबती की कहानियों में भाषा प्रभावशाली बनी है।

कृष्णा सोबती के कहानियों में लाक्षणिक भाषा का प्रयोग :

लाक्षणिक भाषा उसे कहते हैं जिसमें बात को सीधी ढंग से न कहकर कुछ अलग ढंग से किया जाता है। एक प्रकार से इसमें अतिश्योक्ति होती है। अर्थात किसी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना।

उदा. - राणा प्रताप का चेतक हवा से बाते करते हुए आगे बढ़ रहा था।

यहाँ मतलब सिर्फ यह कहना था कि राणा प्रताप का घोड़ा चेतक बहुत तेज दौड़ने वाला घोड़ा है। चेतक की खूबी को बताने के लिए इस प्रकार कहा जाता है। वास्तव में कोई आदमी या जानवर हवा से बाते करते हुए नहीं चल सकता। कभी-कभी लाक्षणिक भाषा के प्रयोग के द्वारा हम व्यंग्य को भी प्रकट कर सकते हैं-

उदा. मैथिलीशरण गुप्त जी के लिए चिर गाँवर कहना यहाँ एक अर्थ चिर गाँव के रहने वाले और दूसरा एक दम गाँवार। इसी प्रकार किसी दलित का कवि का परिचय देते हुए पंचम स्वर कहना। यहाँ पंचम के दो अर्थ हैं। एक दलित और दूसरा कोयल।

कृष्णा सोबती जी ने अपनी कहानियों में लाक्षणिक भाषा का प्रयोग किया है।

1. बुआ, दो दिन की मेहमान तो एक ही दिन में चली गई। 89

2. रोशनी की और पूरी आँखों से मुझे देखकर अविश्वास और भर्त्सना के कहा- "पागल हो गए हो, रवि !"90

3. मैं वर्षों से उसे देखती आई हूँ और आज पत्थर-सी निस्ठुर हो गई हूँ।91

4. अड्डे पर रामगढ़ के लाल लाला सेबों के ढेर देखकर यह नहीं लगा कि यही भुवाली है।92

5. दो आँखें मेरी पीठ पर हैं।93

6. दूर सामने दक्खिन की ओर पानी का ताल धूप में चाँदी के थाल की तरह चमकता था।94

हम कह सकते हैं कि सोबती जी ने कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक स्पष्ट रूप से व्यक्त करने के लिए कहानियों में लाक्षणिक भाषा का प्रयोग किया है। इस प्रकार की लाक्षणिक भाषा का प्रयोग में अर्थ दृष्टिगोचर होता है।

कृष्णा सोबती की कहानियों में प्रतीकों और बिम्बों से युक्त भाषा :

परिवेश की जटिलता को सुलझाने के लिए कृष्णा सोबती ने कहानियों में कई तरह के प्रतीकों का उपयोग किया है। प्रतीक तथा संकेतों के साथ-साथ वातावरण निर्माण की दृष्टि से बिंब का भी सोबती ने उपयोग किया है। बिंब अभिव्यक्ति के स्तर पर नये अर्थ संदर्भों को स्थापित करते हुए रचनाकार के अनुभव संवेदन को प्रेषणीय बनाते हैं। सोबती ने कहानियाें में इस प्रकार के प्रतीकों का प्रयोग किया है।

1. रात को शाहनी जब कैम्प में पहुँचकर जमीन पर पड़ी तो लेटे-लेटे आहत मन से सोचा- "राज पलट गया है... सिक्का क्या बदलेगा? वह तो मैं वहीं छोड आई...."95

इस उद्धरण में सोबती ने सिक्का प्रतीक द्वारा तत्कालीन परिवेश की क्रूरता और अराजकता को व्यक्त किया है। उन्होंने सिक्के का प्रतीक सार्थक एवं विभाजन के संदर्भ की व्यवस्था की है। "तपी दुपहरी, बँधे-बँधे आकाश पर घुटी-घुटी मटमैली छाया।"96

2. गुलाबजल गंडेरियाँ कहानी में धन्नो की आर्थिक स्थिति, जीवन की घुटन का प्रतीक है।

3. "बदली बरस गई।"97

इस कहानी में कल्याणी के आश्रय छोड़ के चले जाने पर बादलों का जोर से बरसा है। यह बरस साध्वी माँ के हृदय का बोझ कम करने का प्रतीक है।

सोबती जी ने कहानियों में बिम्बों का इस प्रकार प्रयोग किया है-

4. "आकाश में मोती भू पर फूल बनकर खिल गए और एक दिन..... 'मारो-मारो, काटो', 'अल्ला हो अकबर', 'हर-हर महादेव... बहार के गुलशन को रौंदते हुए वह हजारों कदम, खून में तैरती हुई वह आँखें और हथियारों को तौलते हुए वह हाथ....।"मारो-मारों की आवाजें करीब आ रही हैं और, करीब और करीब हल्की सी चीख निकली और दो मजबूत बाँहों ने उस मूर्च्छित से शरीर को थामकर ६ गीमे सक कहा- "डरो मत, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा।"98 यह 'डरो मत, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा' का विभाजन के क्रूर अमानवीय वातावरण को सजीव करता है।

5. "खड़ी हूँ, सामने चाँदनी में तैरता ताल है, ताल पर मचलती लहरे हैं। लहरों में लहरों की गलबहियों हैं और मैं खड़ी हूँ। चारों और खड़े पहाड़ों पर सूनसान फैला है। सूनसान में खोए वृक्षों को चाँदनी चमकती है, चमकती है, पर जगाती नहीं। ताल से भीग भीग कर हवा मेरा आँचल फहराती है, पर सहलाती नहीं। और मैं पहाड़ों पर बिछे अंधियारे मौन की तरह स्वयं मौन बनी खड़ी हूँ।"99 इस कहानी में प्रकृति के कई बिम्ब देखने को मिलते हैं। यहाँ (इस उद्धरण में) प्रकृति का सौन्दर्य चित्रण नायिका की मन स्थितियों को स्पष्ट करती है।

प्रतीक और बिंम्ब की विशेषता के कारण सोबती जी की कहानियों में कच्य प्रभावपूर्ण बन पड़ा।

निष्कर्ष

हिन्दी कहानीकारों में कृष्णा सोबती का नाम विशेष उल्लेखनीय है। बादलो के घेर कहानी संग्रह की कहानियों का विश्लेषण करने से यह स्पष्ट होता है कि कृष्णा सोबती ने विविध विषयों से संबंधित विविध प्रकार की कहानियों का सृजन किया है। सोबती की कहानियाँ जीवन के विविध क्षेत्रों का जीवत साक्षात्कार कराती हैं। चाहे क्रांतिकारी जीवन हो, प्रेम का क्षेत्र हो. भारत विभाजन से उत्पन्न मनः स्थितियों हो या जीवन की जटिलता, घुटन, पीड़ा निराशा का चित्रण हो। सामाजिक पारिवारिक विघटन इनकी कहानियों में मिलता है। महिला होने के नाते स्त्री वर्ग की कठिनाईयों को सहज स्वाभाविक रूप से व्यक्त किया है। नारी के ऊपर पड़े नैतिक रूढ़ियों के आवरण को हटाया है। उन्होंने समाज में फैली वितृष्ण को स्वीकार किया है। अपनी कहानियों के माध्यम से उन्हे अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है।

कृष्णा सोबती की भाषा के विषय में हम कह सकते हैं कि उन्होंने विशिष्ट भाषा और शब्दावली के प्रयोग द्वारा कहानी को अधिक सार्थक बनाने का प्रयत्न किया है। पंजाबी भाषा भाषी होने पर भी उन्होंने हिन्दी में कहानियाँ लिखी हैं। उन्होंने हिन्दी भाषा में उर्दू, फारसी, देशज, पंजाबी एवं क्षेत्रीय भाषाओं के शब्दों को अपनाते हुए भाषायी समन्वय का प्रयास किया है।

सोबती ने अत्यधिक सफलता से प्रतीकों और बिम्बों के प्रयोग में नवीनता और मौलिकता का परिचय दिया है।

संदर्भ :

1. भारतीय लेखिकाओं से साक्षात्कार डॉ. रणवीर संग्रा - पृ.सं 60

2. कृष्णा सोबती - बादलों के घेरे पृ.सं. 45

3. वही, पृ.सं. 56

4. वही, पृ.सं. 73

5. वही, पृ.सं. 73

6.वही, पृ.सं. 74

7. वही, पृ.सं. 90

8. वही, पृ.सं. 106

9.वही, पृ.सं. 115

10. वही, पृ.सं. 115

11. वही, पृ.सं. 116

12. वही, पृ.सं. 128

13. वही, पृ. सं 133

14. वही, पृ.सं. 138

15. वही, पृ.सं. 140

16 वही, पृ.सं 143

17. वही, पृ.सं. 145

18. वही, पृ.सं. 150

19. वही, पृ.सं. 161

20. वही,पृ.स. 164

21. वही, पृ.सं. 177

22. वही, पृ.सं. 182

23. वही, पृ.सं. 190

24. वही, पृ.सं. 190

25. वही, पृ.सं. 190

26. वही, पृ.सं. 191

27. डॉ. याई रवि सुबोध हिन्दी व्याकरण पृ.सं. 7

28. श्रीशरण बजरंग व्यावहारिक व्याकरण पृ.सं. 63

29. कामता प्रसाद गुरु हिन्दी व्याकरण पृ.सं. 509

30. कृष्णा सोबती बादलों के घेरे में पृ.सं. 45

31. वही, पृ.सं. 9

32. वही, पृ.सं. 16

33. वही, पृ.सं. 19

34. वही, पृ.सं. 21

35. वही, पृ.सं. 25

36. वही, पृ.सं. 36

37. वही, पृ.सं. 42

38. वही, पृ.सं. 44

39. वही, पृ.सं. 50

40. दादी अम्मा पृ.सं. 32

41. वही, पृ.सं. 33

42. वही, पृ.सं. 41

43. वही, पृ.सं. 41

44. भोले बादशाह पृ.सं. 47

45. वही, पृ.सं. 51

46. वही, पृ.सं. 52

47. वही, पृ.सं. 54

48. वही, पृ.सं. 50

49. पहाड़ों के साये तले पृ.सं. 156

50. कामदार खीभमलाल पृ.स 146

51. आजादी शम्मोजान की पू.सं. 143

52 खम्माधणी अन्नदाता पृ.सं. 127

53. वही, पृ.सं. 128

54. अभी उसी दिन ही तो पृ.सं. 104

55. कृष्णा सोबती बादलों के घेरे में पृ.सं. 13

56. वही, पृ.सं. 21

57. वही, पृ.सं. 39

58. वही, पृ.सं. 42

59. वही, पृ.सं. 44

60. वही, पृ.सं. 46

61. वही, पृ.सं. 48

62. वही, पृ.सं. 49

63. वही, पृ.सं. 19

64. वही, पृ.सं. 27

65. वही, पृ.सं. 32

66. वही, पृ.सं. 34

67. वही, पृ.सं. 111

68. वही, पृ.सं. 78

69. वही, पृ.सं. 69

70. वही, पृ.सं. 108

71. वही, पृ.सं. 104

72. वही, पृ.सं. 134

73. वही, पृ.सं. 145

74. वही, पृ.सं. 179

75. वही, पृ.सं. 150

76. वही, पृ.सं. 34

77. वही, पृ.सं. 41

78. वही, पृ.सं. 52

79. वही, पृ.सं. 52

80. वही, पृ.सं. 59

81. वही, पृ.सं. 75

82. वही, पृ.सं. 75

83. वही, पृ.सं. 80

84. वही, पृ.सं. 202

85. वही, पृ.सं. 81

86. वही, पृ.सं. 117

87. वही, पृ.सं. 126

88. वही, पृ.सं. 186

89. वही, पृ.सं. 14

90. वही, पृ.सं. 16

91. वही, पृ.सं. 16

92. वही, पृ.सं. 16

93. वही, पृ.सं. 17

94. वही, पृ.सं. 17

95. कृष्णा सोबती बादलों के घेरे में सिक्का बदल गया पृ.सं. 140

96. कृष्णा सोबती - बादलों के घेरे में गुलाब गंडेरियाँ - पृ.सं. 74

97. वही, पृ.सं. 65

98. कृष्णा सोबती बादलों के घेरे में डरो मत मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा- पृ.सं. 115

99. कृष्णा सोबती बादलों के घेरे में पहाड़ों के साये तले पृ.सं. 15

उपसंहार

साठोत्तरी हिन्दी लेखिकाओं में कृष्णा सोबती एक बहु चर्चित लेखिका, कहानीकार एवं उपन्यासकार है। नारी जीवन की विडंबनाओं को कृष्णा सोबती ने नए तेवर के साथ व्यक्त किया है। उनके स्त्री पात्र सामाजिक रूढ़ियों से उत्पन्न अत्याचारों में पिसते नहीं, उनका सामना डटकर कर सकते हैं। कृष्णा सोबती की कहानियाँ हर एक व्यक्ति को बहुत प्रभावित करती है। उन्होंने अपने कहानी संग्रह में जितनी भी कहानियाँ लिखी वे सभी कहानियाँ हर मनुष्य को पढ़ने तथा उनपर गंभीर विचार करने को मजबूर करती है। उनकी कहानियों में अलग ही नशा है जो सभी को पढ़ने को रोकता नहीं। बार बार पढ़ते रहने का मन करता रहता है।

इस लघु शोध के प्रथम अध्याय में कृष्णा सोबती का व्यक्तित्व एवं कृतित्व का उल्लेख किया गया है। जिसमें कृष्णा सोबती के जन्म से लेकर, उनके परिवार में कौन है, कृष्णा सोबती को किससे प्रेरणा मिली, उनका परिवार कहा रहता था, परिवार के लोग पढ़ाई के मामले में कैसे थे, बाद में उनकी शिक्षा कहा हुई और कृष्णा सोबती कैसी औरत थी, किन लोगों से वह प्रभावित हुई थी अपनी रचनाएँ लिखने के लिए एवं उन्होंने अपने साहित्य में किन-किन विषयों पर चर्चा की है इन सभी पर प्रकाश डाला गया है।

द्वीतीय अध्याय में 'बादलों के घेरे' कहानी संग्रह में चित्रित समस्याओ का चित्रण किया गया है। जिसमें प्रस्तुत कहानी संग्रह के कहानियों में चित्रित हर एक समस्या को सामने लाकर उन सामस्याओं का समाधान निकालने की कोशिश तथा मध्यवर्गीय परिवारों में जितनी भी समस्याएँ है उस यथार्थ को सामने लाने का प्रयास किया है। मध्यवर्गीय परिवार में जैसे स्त्री-पुरुष संबंध में द्वंद्व, बीमारी की समस्या, विधवा की समस्या, रिश्ते-नातों में आए बदलाव आदि समस्याओं पर मार्मिक चर्चा की गई है।

तृतीय अध्याय में 'बादलों के घेरे' कहानी संग्रह की कहानियों का तत्वो के आधार पर समीक्षा की गई है। बादलों के घेरे कहानी संग्रह में जितनी भी कहानियाँ है उन सभी कहानियों का तत्वो के आधार पर उनका विश्लेषण किया गया है, जैसे कथानक, चरित्र चित्रण, संवाद, देशकाल-वातावरण, भाषा, शैली और उद्देश। तत्वों के आधार पर समीक्षा करना ही इस अध्याय का उद्देश रहा है।

चतुर्थ अध्याय में उपर्युक्त सभी कहानियों तथा संपूर्ण कहानी संग्रह के भाषा-शैली, शब्द चयन, वाक्य रचना, प्रोक्तियोजना एवं संवादों का उल्लेख किया है। अंत में उपसंहार और संदर्भ सूची प्रस्तुत की गई है।

परिवेश की जटिलता को सुलझाने के लिए कृष्णा सोबती ने कहानियों में कई तरह के प्रतीकों का उपयोग किया है। प्रतीक तथा संकेतों के साथ-साथ वातावरण निर्माण की दृष्टि से बिंब का भी सोबती ने उपयोग किया है।

भारत के विभिन्न समस्याओं को अपनी रचनाओं में उजागर कर कृष्णा सोबती नें भारतीय साहित्य में अपना बहुत बड़ा योगदान दिया है। कृष्णा सोबती नें केवल कहानियों पर ही नहीं बल्कि उपन्यास, कविताएं, यात्रा वृतांन आदि विषयों पर भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं।

कृष्णा सोबती की कहानियों तथा उपन्यासों में पंजाब की आत्मा और उसकी मिट्टी की गंध मिलती हैं। कृष्णा सोबती एक पंजाबी होने के बावजूद उन्होंने हिंदी में अपनी रचनाएँ लिखी।

उन्होंने अपने कहानियों की कथा भाषा में तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी आदि शब्दों का प्रयोग अपने कथा साहित्य को और आकर्षित बनाने के लिए किया है। उनकी कहानियाँ आकर्षित ही नहीं बल्कि लाभदायक भी है। उन कहानियों को पढ़कर सभी बहुत प्रभावित होते हैं। कृष्णा सोबती ने अत्यधिक सफलता से प्रतीकों और बिम्बों के प्रयोग में नवीनता और मौलिकता का परिचय दिया है। इसके अतिरिक्त कृष्णा सोबती ने कहानियों में ध्वन्यात्मक और द्वित्वकृत शब्दों का भी प्रयोग किया हैं।

विशेष रूप से महिला लेखिकाएँ एक बँधी लीक पर चलती है। लेकिन कृष्णा सोबती ही एकमात्र ऐसी लेखिका है जो इससे मुक्त है। इस प्रकार चित्रण करने वाली महान कथाकर कृष्णा सोबती जी का हिंदी कथाभाषा वैशिष्ट्य में शीर्षस्थ स्थान है।

संदर्भ

१. कृष्णा सोबती की कथा भाषा डॉ. एन जयश्री पृ. संख्या ११।

२. कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में चित्रित ग्रामीण जीवन डॉ. सौ. सुरेखा लक्षमण तांबे पृ. संख्या १९-२०।

३. सोबती एक सोहबत कृष्णा सोबती पृ. संख्या ४०६।

४. कृष्णा सोबती : व्यक्तित्व और कृतित्व डॉ. शंकर ए. राठोड - पृ. संख्या २१।

५. कृष्णा सोबती, बादलों के घेरे, राजकमल प्रकाशन, 1 बी, नेताजी , नेताजी सुभाष मार्ग, न नई दिल्ली 110002, 19801

६. डॉ. एन. जयश्री, कृष्णा सोबती की कथा भाषा, विद्या प्रकाशन, 'सी-449, गुजैनी, कानपुर 208 022 दूरभाषा: 0512- 2285003-20131

७. छबिल कुमार मेहेर, कृष्णा सोबती एक मूल्यांकन, सामयिक बुक्स, 3320-21, जटवाडा, दरयागंज, एन. एस. मार्ग, नई दिल्ली- 110002-20161

८. सुप्रिया, पी., कृष्णा सोबती की कहानी कला, गोविन्द पचौरी, जवाहर पुस्तकालय,

हिन्दी पुस्तक प्रकाशक एवं वितरक सदर बाजार, मथुरा (उ.प्र.)-281001-20081

९. प्रा. सपना नामदेवराव काळबांडे, कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में विभिन्न समस्याओं का चित्रण, श्रीराम प्रकाशन, G-398, गुजैनी, कानपुर-208 022-20151

१०. डॉ. ब्रिजिट पॉल, कृष्णा सोबती व्यक्ति एवं साहित्य, कुंजबिहारी पचौरी जवाहर पुस्तकालय, मथुरा (उ.प्र.) 281001-20051

११. भारतीय लेखिकाओं से साक्षात्कार डॉ. रणवीर संग्रा

१२. माषा का अवधारण - स्वरूप एवं प्रकार

१३. देवेन्द्रनाथ शर्मा दीप्ति शर्मा- भाषा विज्ञान की भूमिका

१४. धीरेंद्र वर्मा - हिन्दी भाषा का विकास

१५. दान बहादूर पाठक भाषा विज्ञान

१६. आचार्य जयेंद्र त्रिवेदी- हिन्दी रूप रचना

१७. जियालाल हण्डू रघुनाथ सफाया- भाषा और साहित्य का विवेचन

१८. महावीर सरल जैन- भाषा एंव विज्ञान

१९. डॉ. वी. कृष्णा स्वामी आयंगार- पाणिनीय व्याकरण की भूमिका

२०. डॉ. वी. कृष्णा स्वामी आयंगार- पाणिनीय व्याकरण की भूमिका